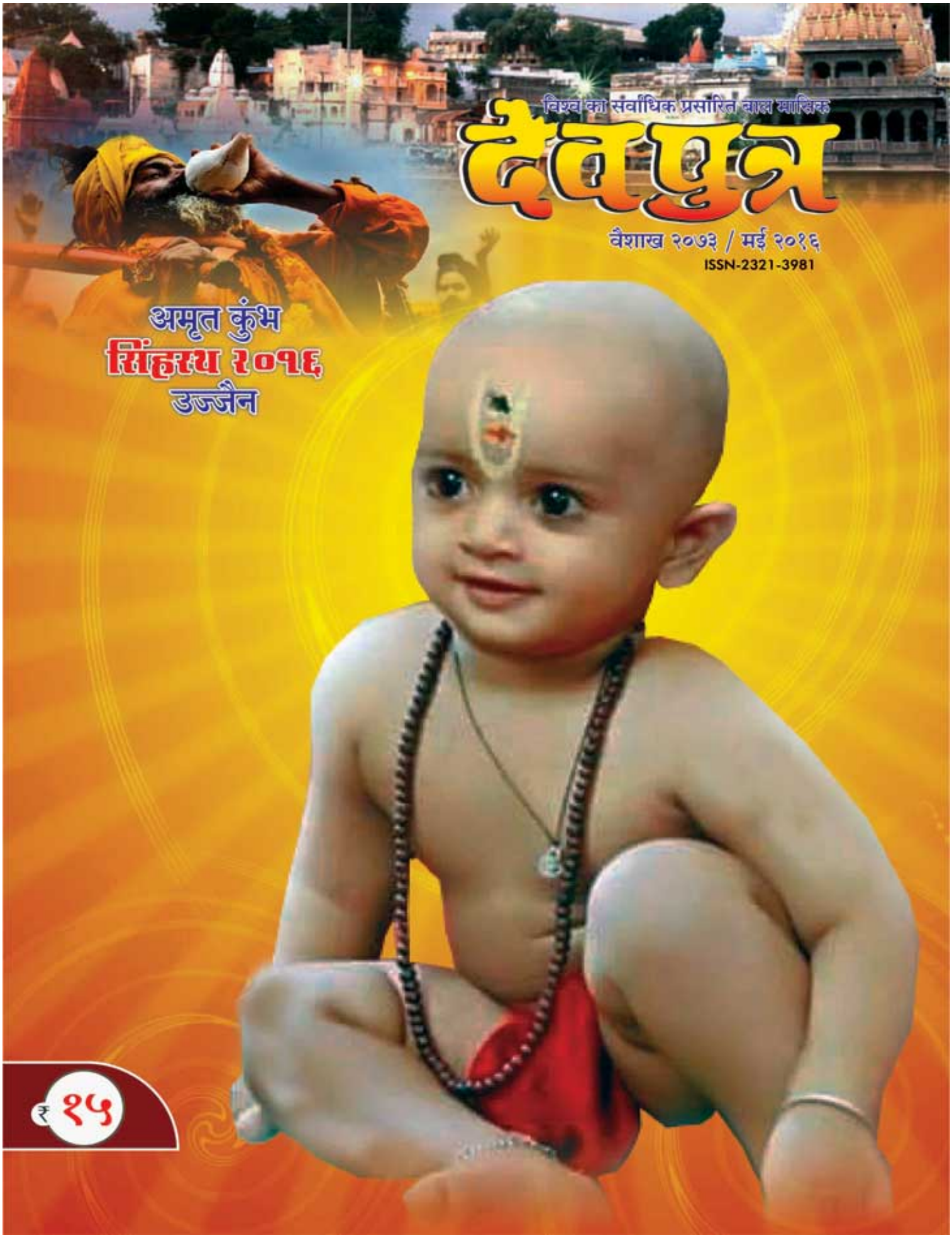

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक
देवपुत्र
वैशाख २०७३ / मई २०१६
ISSN-2321-3981
अमृत कुंभ
सिंहस्थ २०१६
उज्जैन
₹ १५

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

वैशाख २०७३ ▪ वर्ष ३६
मई २०१६ ▪ अंक ११

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	१५ रुपये
वार्षिक	:	१५० रुपये
त्रैवार्षिक	:	४०० रुपये
पंचवार्षिक	:	६०० रुपये
आजीवन	:	११०० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९,
२४००४३९

e-mail -devputraindore@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

इस अंक के आपके हाथों में पहुंचने तक तब पुराणों में प्रसिद्ध उज्जैन नगरी में अपनी संस्कृति का महापर्व सिंहस्थ प्रारम्भ हो चुका होगा। प्रत्येक बारहवें वर्ष भारत के चार प्रमुख तीर्थों पर करोड़ों श्रद्धालुओं और लाखों संतों का ऐसा विराट मिलन जाने कितनी सदियों से चला आ रहा है। पुराणों में इस पर्व से जुड़ी एक कथा आपने भी सुनी होगी। जिसके अनुसार देवताओं और दानवों ने मिलकर अमृत पाने के लिए एक बार क्षीरसागर का मंथन किया। उन्होंने संसार की सारी औषधियाँ समुद्र में डाली, नागराज वासुकी को रस्सी बनाकर मन्दराचल को मथानी बनाया और अत्यंत परिश्रम से मथने लगे। परिणाम स्वरूप जैसे दही मथने से माखन मिलता है वैसे ही १४ दुर्लभ वस्तुएँ उन्हें मिलीं। जिन्हें वे अपनी रुचि से वे आपस में बाँटते गए, लेकिन 'अमृत' जो सर्वश्रेष्ठ पदार्थ था उसे कोई भी नहीं छोड़ना चाहता था। संघर्ष हुआ, वाद-विवाद हुए और दानवों से छुड़ाकर गरुड़ अमृत का घड़ा (कुंभ) ले भागे। रास्ते में प्रयाग, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में कुभ से अमृत की कुछ बूंदें छलक गई। तब से हर बारह वर्ष के अन्तराल से इन चारों स्थानों पर इस महापर्व कुंभ का आयोजन होता रहा है।

मैं इस कथा के विस्तार में न जाकर आपको इसका एक संदेश बताना चाहता हूँ। देव और दानव बहुत शक्तिशाली थे अनेक विशेष गुणों-अवगुणों से युक्त। अपने परिश्रम से प्राप्त अमृत का वितरण भी आपस में कर सकते थे पर स्वार्थवश नहीं कर सके। अपनी योग्यता समझे बगैर वे इस श्रेष्ठतम उपलब्धि के इकलौते स्वामी बनना चाहते थे। पूरा घड़ा भर अमृत भी निर्विवाद न बँट सका जबकि उसकी कुछ बूँदों को मानव सदियों से आपस में बाँटता दिखता है इन महापर्वों पर। उसके पास है श्रद्धा का वासुकि, विश्वास का मंदराचल, आस्था का क्षीरसागर और समर्पण की शक्ति। वह मानवता का अमृत निकालता है और समरस भाव से परस्पर बांट लेता है अपने असंख्य बन्धुओं में। वह अमर होता है या नहीं, पर जब तक यह अमृत है हमारी संस्कृति अमर रहेगी। हम इसे संतों के सान्निध्य का प्रभाव कहें या मानवता के अमृत का। एक भारतीय की भांति हमें भी डुबकी लगाना ही चाहिए इस सांस्कृतिक महामिलन के पर्व पर इस परम्परा को आगे बढ़ाते हुए।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

कहानी

- कम्प्यूटर में वायरस - डॉ. राजीव गुप्ता ०५
- असली जीत - महेन्द्र कुमार वर्मा ०९
- कर्तव्य का एहसास - डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल' १२
- सिक्कों का आन्दोलन - बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान' १६
- लक्कड बाबा - डॉ. मालती शर्मा 'गोपिका' २०
- मिट्ठू -डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव ४२

लघुकथा

- नन्ही - डॉ. मंजरी शुक्ला ४०
- विनम्रता - विष्णुप्रसाद चौहान ४३

लोककथा

- मगर को जीभ क्यों नहीं - शशि गोयल ३२

कविता

- सत्य अहिंसा के ... - अशोक अंजुम ०८
- सीधी राह उन्हें सिखाती - दिविक रमेश १५
- रसगुल्ले - लक्ष्मी खन्ना 'सुमन' २२
- कितनी अच्छी... - योगेन्द्र भाटी 'योगी' ३५
- सूरज दादा - राकेश चक्र ३८
- रोज सुबह - - ३८
- सनातन नाता - डॉ. रामनिवास 'मानव' ३९
- गोल - लक्ष्मीनारायण भाला ४४
- सड़क - निर्मला सिंह ४६

चित्रकथा

- दांतों का इलाज - देवांशु वत्स ३७
- छुट्टियों में - देवांशु वत्स ५०

बाल प्रस्तुति

- खेल करें जी खेल करें - राधिका राठौर १०
- सृजन करें - प्रतिभा १८
- सकारात्मकता - नारायण व्यास २६
- समझदार नौकर - वैष्णवी सिंह ४७
- चुटकुले - - ४८

स्तंभ

- हमारे राज्य पुष्प -डॉ. परशुराम शुक्ल १३
- कॅरियर दिशा - डॉ. जयंतीलाल भंडारी ३६
- पुस्तक परिचय - ४१
- प्रतिभा परिचय - हार्दिक दवे २८
- आपकी पाती - ४९

एवं ढेरों मनोरंजक व ज्ञानवर्धक सामग्री

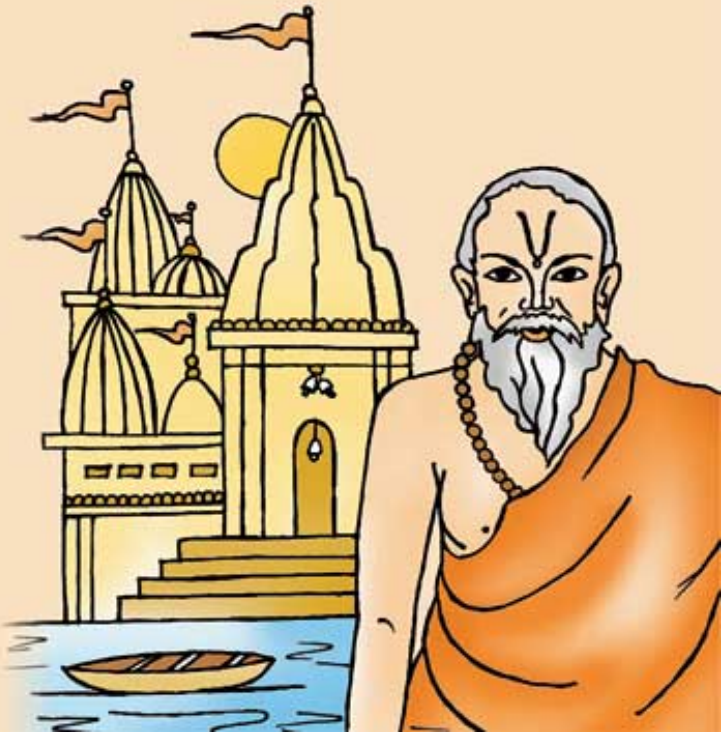

विज्ञान कथा : डॉ. राजीव गुप्ता

कम्प्यूटर में वायरस

चंपक वन के मोंटी बंदर ने बहुत मेहनत से कम्प्यूटर का कोर्स पूरा करके डिग्री हासिल की थी।

कुछ दिन तो वह नौकरी की तलाश में इधर-उधर मारा-मारा फिरता रहा, पर फिर उसने चंपक वन में ही एक कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र खोल लिया। उसने इंटरनेट का कनेक्शन भी ले रखा था। जिससे उसके यहां इंटरनेट चैटिंग की भी सुविधा थी।

देखते ही देखते उसका कम्प्यूटर सेंटर बहुत अच्छा चलने लगा। चंपक वन के कई जानवर कम्प्यूटर एवं इंटरनेट की सुविधा का भरपूर लाभ उठाने लगे।

डॉ. जेरू जिराफ अब अपने गंभीर मरीजों के इलाज के लिए इंटरनेट के माध्यम से अन्य बड़े शहरों एवं विदेशों के बड़े-बड़े डॉक्टरों से भी सलाह-मशवरा करने लगे। जिससे उनको अपने मरीजों का इलाज करने में बहुत सहायता मिली।

चंपक वन के प्रसिद्ध लेखक सोनू गधे ने अपनी सारी कहानियों को कम्प्यूटर की मेमोरी में भर दिया। अब उन्हें जिस कहानी को पत्रिका में भेजना होता, प्रिंटर के माध्यम से निकाल लेता था। इससे उसे बार-बार कहानी लिखने की झंझट से छुटकारा मिल गया था। इसे बचे हुए समय का सदुपयोग वे नई नई कविता कहानियाँ लिखने में करता था।

चंपक वन के कुछ जानवरों को देश-विदेश के अन्य जानवरों के साथ चैंटिग करने में मजा आ रहा था। इसके माध्यम से वे नए-नए दोस्त बनाने और अन्य जगहों के रीति-रिवाज जानने की कोशिश करते। इससे उनका ज्ञान बढ़ता और उन्हें लगता कि वे चंपक वन में रहते हुए भी सारी दुनिया घूम रहे हैं। अब तो उन्हें यह दुनिया बहुत छोटी लगने लगी थी। इंटरनेट के माध्यम से

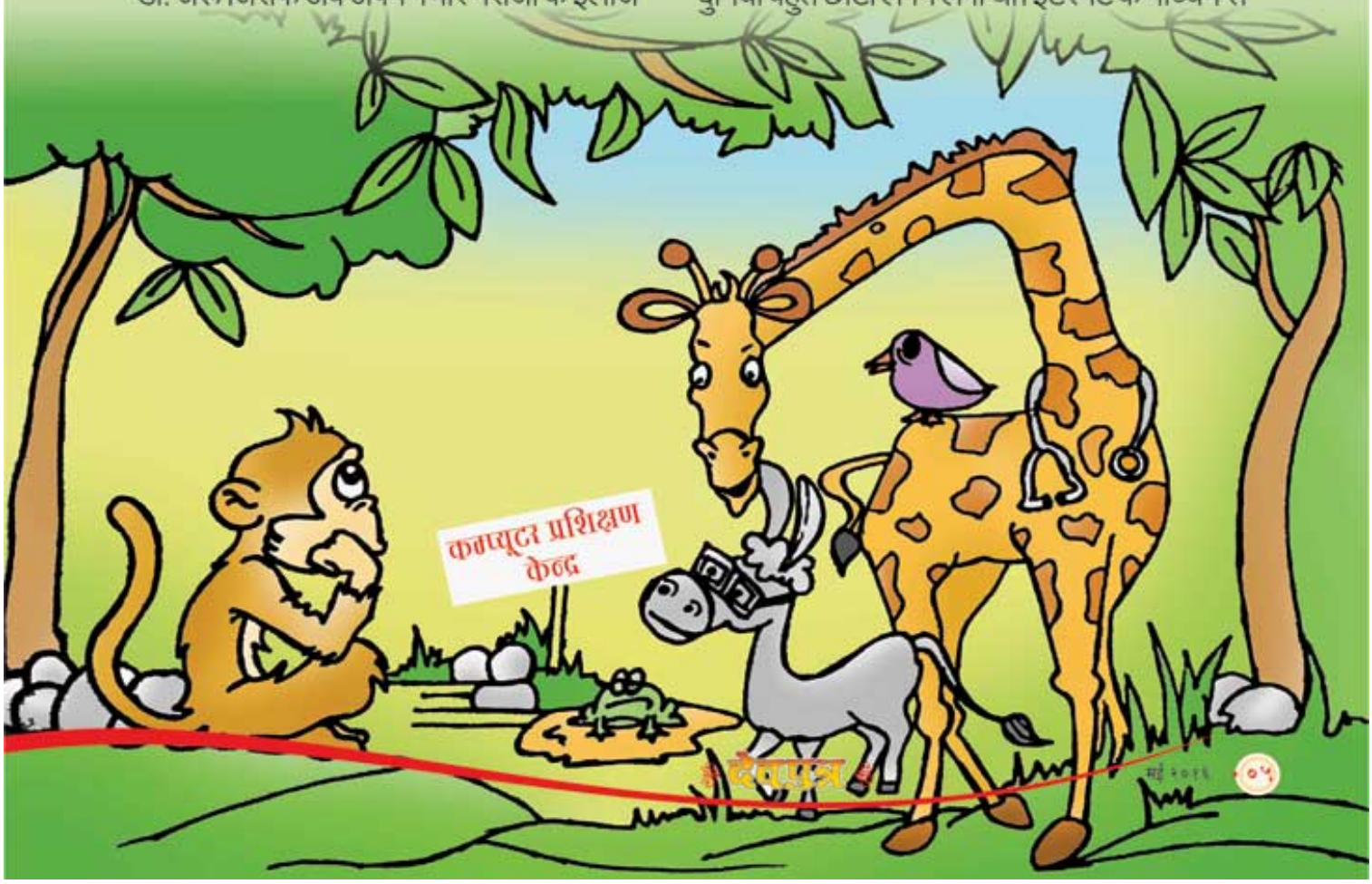

वे पल भर में ही किसी से भी संपर्क स्थापित कर लेते थे।

इस तरह सब खुश थे। पर एक दिन उनकी खुशी गायब हो गई। जब सुबह–सुबह उन्होंने कम्प्यूटर केंद्र के बाहर एक बोर्ड लगा देखा खेद है कि इस समय आप लोग कम्प्यूटर की सेवाएं नहीं ले सकेंगे, क्योंकि इस समय यह वायरस की चपेट में है।

कम्प्यूटर में वायरस....सुनकर सभी जानवर हक्के–बक्के रह गए। चंपक वन में यह खबर जंगल की आग की तरह फैल गई। सोनू महोदय दौड़े–दौड़े आए और पूछने लगे– ''मोंटू बेटे, क्या सचमुच कम्प्यूटर पर वायरस ने हमला कर दिया है?''

''हां काका, यह सच है।''

''तो फिर मेरी कहानियां?''

''इस समय कम्प्यूटर ने उन सबको भुला दिया है।''

''अरे अब क्या होगा? मैंने तो इस कम्प्यूटर की मेमोरी पर भरोसा करके अपनी कहानियों की मूल प्रतियां ही जला दी थी।'' रोनी सूरज बना कर सोनू बोला।

''धैर्य रखिए काका, मैं इस के वायरस के संक्रमण को समाप्त करने का प्रयास कर रहा हूं। शहर से इसके लिए डॉक्टर को भी बुलाया है।''

''अरे बेटा, शहर से डॉक्टर बुलवाने की क्या जरूरत थी, क्या तुझे मुझ पर विश्वास नहीं रहा? यह मौसम ही वायरल फीवर का है। यह रोग तो एक से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। कम्प्यूटर को सुबह से शाम तक इतने लोग घेरे रहते थे, इसे तो यह रोग होना ही था।'' डॉक्टर जेरू जिराफ ने उसी समय कमरे में प्रवेश करते हुए कहा।

''आइए, डाक्टर काका!'' मोंटी उनकी बात सुन कर मुस्कराया।

''कहाँ है कम्प्यूटर जी? मैं अभी उन पर पेंनिसिलीन का छिड़काव करता हूं। इसके अंदर जितने भी वायरस होंगे सब के सब भाग खड़े होंगे या फिर मर जाएंगे।'' डॉ. जेरू ने पेंनिसिलीन का इंजेक्शन भरते हुए कहा।

उनकी बात सुनकर मोंटी न चाहते हुए भी हंसी से लोटपोट हो गया।

''अरे, तुम मेरी बात सुनकर हंस रहे हो? मैंने कुछ गलत तो नहीं कहा, मोंटी?'' मोंटी को हंसता देख कर वे हैरान थे।

''दरअसल आप बिल्कुल गलत समझ रहे हैं, डॉ. काका।'' किसी तरह अपनी हंसी रोकते हुए मोंटी ने कहा।

''मैं समझा नहीं?''

''वास्तव में कम्प्यूटर वायरस की तुलना हम लोगों में रोग फैलाने वाले वायरस से नहीं की जा सकती, क्योंकि कम्प्यूटर वायरस कोई वास्तव का वायरस नहीं है।''

''अरे! फिर यह क्या बला है?''

''यह कम्प्यूटर के लिए लिखा गया एक ऐसा प्रोग्राम है जो कम्प्यूटर की सामान्य कार्यक्षमता में बाधा डालता है। यह किसी भी वायरस युक्त फ्लापी को कम्प्यूटर में प्रयोग करने से फैलता है।''

''माफ करना मोंटी! मैं तुम्हारी बात ठीक से समझ नहीं पा रहा हूं।'' इतनी देर से इन दोनों की बातों को समझाने की कोशिश कर रहे सोनू जी ने पूछा।

''सोनू काका! इसे ऐसे समझिए, जिस प्रकार गलत इंजेक्शन का प्रभाव रोगी पर गलत ही पड़ता है, उसी प्रकार कुछ लोग ऐसी फ्लापी जानबूझ कर बनाते हैं जिससे उनका उपयोग करने वालों का कम्प्यूटर काम करना बंद कर दें।''

''ओह, तो यह बात है।''

''हाँ काका! अंजाने में ही यदि आप वायरस युक्त फ्लापी का उपयोग करें तो पल भर में ही उसमें मौजूद वायरस आपके कम्प्यूटर के हार्ड डिस्क में प्रवेश कर वायरस आपके कम्प्यूटर के हार्डडिस्क में प्रवेश कर जाते हैं और उसके काम में बाधा डालने लगते हैं। जब

कम्प्यूटर में भी फैलता चला जाता है।''

''तो क्या हमारा कम्प्यूटर कभी ठीक नहीं होगा?'' बड़ी मायूसी से सोनू जी ने पूछा।

''होगा क्यों नही, अब इसे एंटी वायरस टीका देना पड़ेगा।''

''लेकिन बेटा, अभी–अभी तो तुम कह रहे थे कि यह वायरस कोई सचमुच का वायरस नहीं होता है फिर इन पर एंटी वायरस टीकों का क्या असर होगा?'' डॉ. जेरू ने कुछ संकोच से पूछा।

''हाँ डॉ. काका! पर यह टीका भी कोई दवा नहीं है, बल्कि एक प्रकार का कम्प्यूटर प्रोग्राम ही होता है। इसके उपयोग से कम्प्यूटर वायरस को समाप्त किया जा सकता है। यदि मैंने पहले ही अपने कम्प्यूटर में एंटी वायरस डलवा लिया होता तो यह मुसीबत ही खड़ी नहीं होती।''

''अब सारी बात समझ में आई।'' डॉ. जेरू और सोनू जी ने राहत की सांस ली।

दूसरे दिन सचमुच शहर से कम्प्यूटर इंजीनियर ने आकर कम्प्यूटर से वायरस को निकाल बाहर किया। दरअसल कम्प्यूटर इंजीनियर ही इसका असली डॉक्टर होता है।

अब सब लोग खुश थे। मगर फिर भी सोनू जी ने अपनी कहानियों की एक–एक प्रति अपने पास रखना अधिक उचित समझा। उन्हें डर था कि कहीं फिर से कम्प्यूटर वायरस की चपेट में न आ जाए। वैसे वे इस विषय पर एक कहानी लिखने के लिए मोंटी से अधिक से अधिक जानकारी ले रहे थे।

● फर्रुखाबाद (उ.प्र.)

बाल पहेलियाँ : जय कुर्मी

पहेलियाँ

(१)

विद्या देते, दुःख हर लेते
चूहे पर चलते-चलते।
लड्डू खाते, तोंद फुलाते
ढेर करें लिखते-लिखते।।
ज्ञानी बन जाओगे, उनकी
रचना को पढ़ते-पढ़ते।
कौन देवता बूझो भैया
जिन्हें भवानी सुत कहते?

(२)

पहला सत्याग्रही विश्व का
लगन लगी श्री हरि की।
जिसने कभी नहीं स्वीकारी
झूठी सत्ता पितु की।।
खड्ग अंग को काट न पाई
पावक जला न पाया।
किसे बचाने नृसिंह बनकर
परमेश्वर था आया?

(३)

कोई काम कठिन ना जिसको
संकट मोचन न्यारा।
कई बार जिसने राघव को
गाढ़े समय उबारा।।
रोम-रोम में राम रमा है
जिसने लंक जलाई।
घर-घर में पूजी जाती है
किसकी शुचि सेवकाई?

(उत्तर इसी अंक में।)

● गौरझामर (म.प्र.)

बुद्ध पूर्णिमा : २१ मई

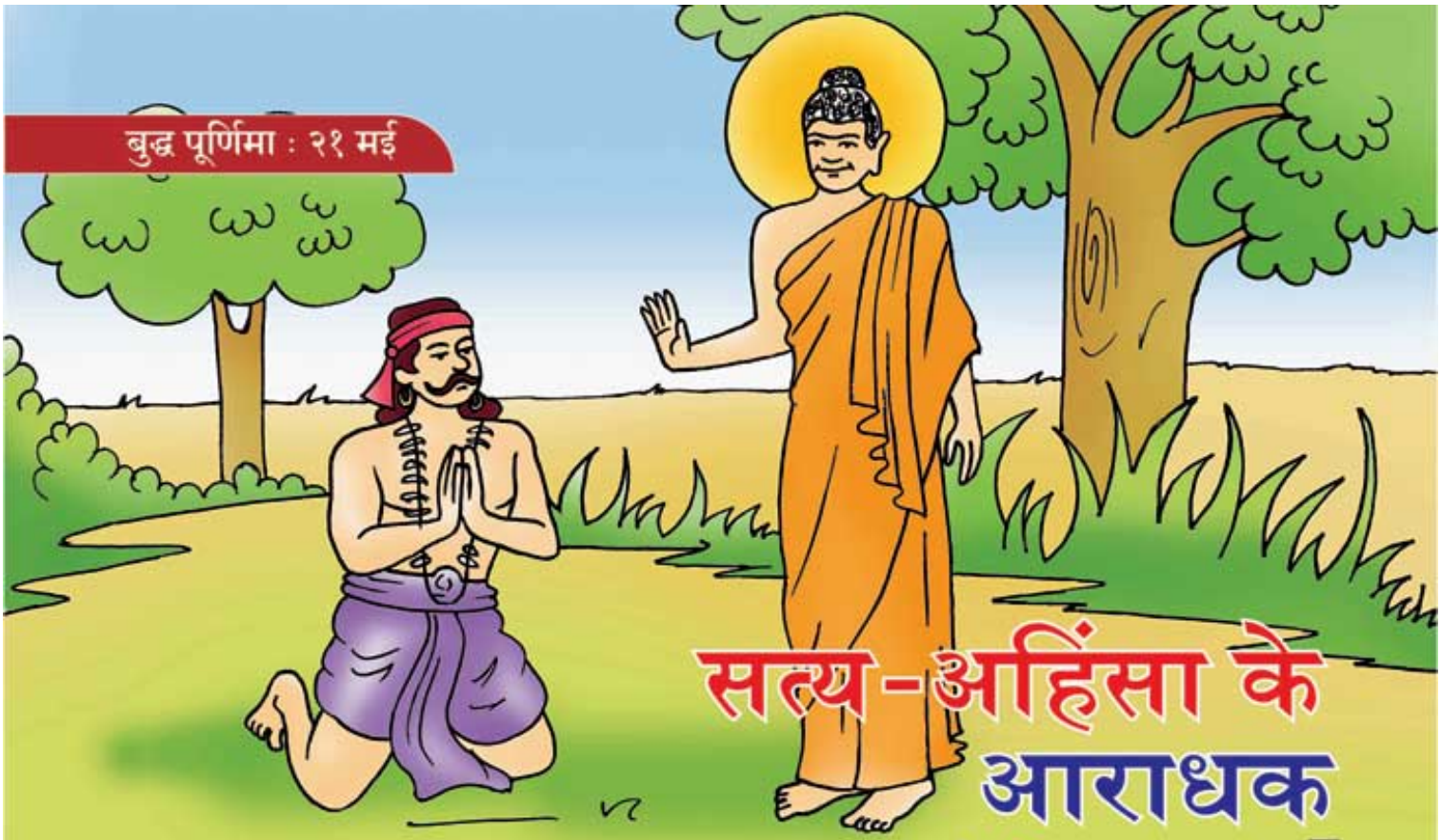

सत्य-अहिंसा के आराधक

कविता : अशोक 'अंजुम'

एक कहानी बहुत पुरानी
अक्सर हमें सुनाते काकू-
एक घने जंगल में रहता
अंगुलिमाल नाम का डाकू,
डाकू क्या था नरपिशाच था
उसने की थी एक प्रतिज्ञा-
वह निश्चित ही करके रहेगा
इक हजार लोगों की हत्या।
करके हत्या वह लोगों की
उँगली काट लिया करता था,
गर्दन की माला में फिर वो
उनको डाल लिया करता था।
इक दिन उस जंगल से गुजरे
सत्य-अहिंसा के आराधक,
गौतम बुद्ध नाम था उनका
प्रेम-शांति के वे संवाहक।
अंगुलिमाल जोर से बोला-
''रुक जा, कौन चला जाता है?
ठहर, अरे ओ मूर्ख ठहर जा!
तेरा काल चला आता है।''
बुद्ध रुके, पल-भर मुसकाए
शांत-सौम्य मुख, तेज बरसता,
वे बोले-''ले ठहर गया मैं,
पर पगले तू क्यों न ठहरता?''
चेहरे पर थी अद्‌भुत आभा,
वाणी में था अद्‌भुत जादू,
खड्‌ग फेंककर गिरा चरण में
क्रूर, निर्दयी, हिंसक डाकू।
बोला-''प्रभु दें ज्ञान, क्षमा दें
भटक रहा हूँ, राह दिखाएँ
हिंसा की अंधी गलियों से
मुझ पापी को मुक्ति दिलाएँ।''
प्रभु बोले-''यह सत्य समझ लो,
हिंसा में कुछ सार नहीं है,
वह नर निश्चित ही पशु-सम है
जिसके मन में प्यार नहीं है।''
मन से पश्चाताप करो अब
जीवन अपना सफल बनाओ,
हिंसा त्यागो, जागो प्रियवर,
जग में शांति-प्रेम फैलाओ!
सत्य अहिंसा के गुणवाले
जग में सदा मान पाते हैं,
प्रेम-पुजारी के चरणों में
नर क्या, दानव झुक जाते हैं।

• अलीगढ़ (उ.प्र.)

कहानी : महेन्द्र कुमार वर्मा

असली जीत

राज एक अच्छा किक्रेट खिलाड़ी था। वह आलराउन्डर था तथा विद्यालय की क्रिकेट टीम का कप्तान था। हर वर्ष अन्तरविद्यालय किक्रेट प्रतियागिता में मॉडल स्कूल ही विजयी होता था। तथा उसका सारा श्रेय राज को ही जाता था। इस वर्ष भी क्रिकेट प्रतियोगिता में मॉडल स्कूल विजेता रहा तथा मैन ऑफ दी टूर्नामेंट का पुरस्कार राज को मिला तथा उसे राज्यस्तरीय किक्रेट टीम हेतु चयनित कर लिया गया।

राज्यस्तरीय टीम में चयनित होने पर राज फूला नहीं समाया। घर में भी सभी खुश हुए मगर पिताजी ने उसे समझाते हुए कहा–''बेटा खेलना अच्छी बात है, जमकर खेलो, मगर पढ़ाई छोड़कर खेलना अक्लमंदी नहीं है, मगर राज तो सदा ही तेन्दुलकर का उदाहरण देता कि वह कितना महान खिलाड़ी है, मगर वह ज्यादा कहाँ पढ़ पाया? पिताजी उसे समझाते–''बेटा, पढ़ने से दिमाग मजबूत तथा तेज होता है तथा निर्णय लेने की क्षमता बढ़ जाती है, अध्ययन से ही अपना ध्यान एक स्थान पर केन्द्रित करने का अच्छा अभ्यास हो जाता है तथा ये बातें खेलकूद में बहुत काम आती है। परन्तु उसे तो बस लग रहा था कि कब राज्यस्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता प्रारंभ हो तथा कब वह अपने बल्ले का करिश्मा दिखाए। आजकल उसने पढ़ना लिखना एकदम बन्द कर दिया था।

आखिर वह घड़ी आ गई जिसका राज को बेसब्री से इंतजार था। क्रिकेट प्रतियोगिता का पहला मैच राज की टीम को पिछले साल विजेता टीम के साथ खेलना था। टॉस जीतकर राज की टीम के कप्तान ने पहले क्षेत्ररक्षण का फैसला किया। मैच प्रारंभ हुआ। राज को सबसे पहले गेंदबाजी का मौका दिया गया पहला ओवर मैडन रहा। मगर पिच धीमा होने की वजह से राज के अगले दो ओव्हरों में पच्चीस रन पिटे। उसे फिर गेंदबाजी का मौका नहीं दिया गया। मैच के दौरान राज ने दो कठिन कैच भी छोड़े। यदि वह ये कैच लेने में कामयाब हो जाता तो मैच का रुख ही बदल जाता, मगर कैच मुश्किल थे। मगर अपनी इन असफलताओं से राज निराश नहीं था। उसे स्वतः पर पूरा भरोसा था। वह सोच रहा था कि इस पिच

पर धमाकेदार बल्लेबाजी करके वह सबका मुँह बन्द कर देगा। विपक्षी टीम ने पचास ओव्हरों में चार विकेट खोकर दो सौ पिच्यासी रन बनाए।

अब राज की टीम की बल्लेबाजी करने की बारी आई। उनके सामने दो सौ छियासी रनों का विशाल लक्ष्य था। प्रारंभिक बल्लेबाज के रूप में राज बल्लेबाजी करने उतरा। उसने पहली ही गेंद में चौका लगाना चाहा। मगर बाल पता नहीं कहाँ से घुसकर उसके विकेट को उड़ाकर ले गई। बेचारा राज शून्य पर वापिस पैवेलियन लौटा और धीरे-धीरे राज की टीम एक सौ बासठ रन पर सारे खिलाड़ी खोकर मैच हार कर वापिस लौटी। बेचारा राज मायूस हो उठा।

राज ने सोचा परीक्षा करीब है अब पढ़ाई कर लेनी चाहिए। मगर परीक्षा इतनी करीब आ चुकी थी कि राज चाहकर भी कुछ नहीं कर सका। परीक्षा के सारे सवाल उस पर बाउन्सर बन कर टूट पड़े। बेचारा प्रश्नों के भंवर जाल में फंसा हुआ महसूस कर रहा था। राज ने उत्तर पुस्तिका में क्या क्या लिखा वह खुद ही नहीं समझ पा रहा था। मगर परीक्षाफल ने एक बार फिर उसका विकेट उखाड़ फेंका। वह असफल घोषित किया गया।

इस दोहरी असफलता से उसके आँसू निकल पड़े वह भारी कदमों से घर पहुंचा। पिताजी को जब उसने परीक्षा परिणाम दिखाया तो वे बोले यह तो होना ही था। राज ने लगभग रोते हुए कहा-''पिताजी मुझे माफ कर दीजिए। मैं इस साल कड़ी मेहनत करके कक्षा में प्रथम आकर दिखलाऊंगा तथा क्रिकेट को हाथ भी नहीं लगाऊंगा।'' पिताजी बोले-''बेटा तुम फिर गलती पर हो। सफलता के लिए पढ़ना जितना जरूरी है उतना ही खेलना-कूदना भी जरूरी है। खेलकूद से सेहत अच्छी रहती है तथा शरीर चुस्त-फुर्तीला रहता है। याद रखना स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ दिमाग रहता है। अतः जमकर खेलो तथा जमकर पढ़ो। पढ़ाई में नाम कमाओ तथा खेलकूद में भी आगे बढ़ते जाओ। यही तुम्हारी असली जीत होगी।

● भोपाल (म.प्र.)

बाल प्रस्तुति : राधिका राठौर

खेल करें जी खेल करें

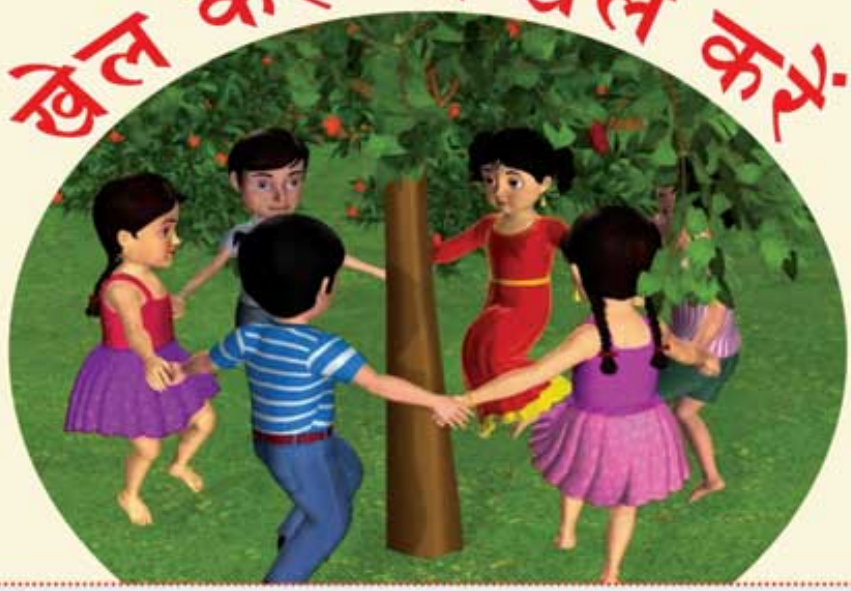

आओ कोई खेल करें...
खेल करे जी खेल करें।
पास किसी को करें,
किसी को फेल करें।
आओ कोई खेल करें...
खेल करे जी खेल करें॥1॥
पुलिस बने कोई चोर बने,
और लड़ाई खूब ठने,
पकड़ चोर को जेल करे।
खेल करें जी खेल करें॥
आओ कोई खेल करें...
खेल करें जी खेल करें॥2॥
खूब लड़े जी खूब लड़े,
सोच रहे क्या खड़े खड़े।
आपस में सब मेल करें
खेल करें जी खेल करें
आओ कोई खेल करें...
खेल करें जी खेल करें॥3॥

● कानड़ (म.प्र.)

नाट्य क्षणिका : चैनराम शर्मा

निडर मेमना

जंगल में एक बहते नाले के पास भेड़िया रहता था जो किसी भी प्यासे जानवर को पानी पीता देखकर उससे झगड़ता और फिर मारकर खा जाता। एक दिन मेमना हिम्मत करके अपनी प्यास बुझाने लगा तो भेड़िये ने उसे ललकारा–

''अरे मेमने!''

''जी....मामाजी?''

''क्यों करता है''

''क्या मामाजी?''

''पानी गन्दा।''

''नहीं मामाजी! ऊपर आप, रहा मैं नीचे। कैसे बहता उल्टा पानी?

''अरे मेमने!''

''जी....मामाजी!''

''क्यों दी तुमने?''

''क्या मामाजी!''

''मुझको गाली।''

''कब मामाजी?''

''गये बरस में''

''मेरी आयु तीन माह की। गए बरस में कैसे दे सकता था गाली?''

''अरे मेमने!''

''जी....मामाजी!''

''क्यों कहता तू?''

''क्या मामाजी?''

''मुझको मामा।''

''मेरी माँ ने मुझे कहा था–उसका भाई, रहता है इस निर्जन वन में। ऐसा लगता, वह तुम ही हो, इसीलिए तुम, कहलाते मेरे मामाजी।''

''अरे भानजे!''

''जी....मामाजी।''

''डरता है क्या?''

''ना मामाजी। मेरी माँ ने, मुझे कहा था, जीने वाले, कभी नहीं, डरते हैं जग में। अब मैं चलता, अपने घर पर, नमस्कार, स्वीकार करो, मेरा मामाजी।''

● खेमली (राज.)

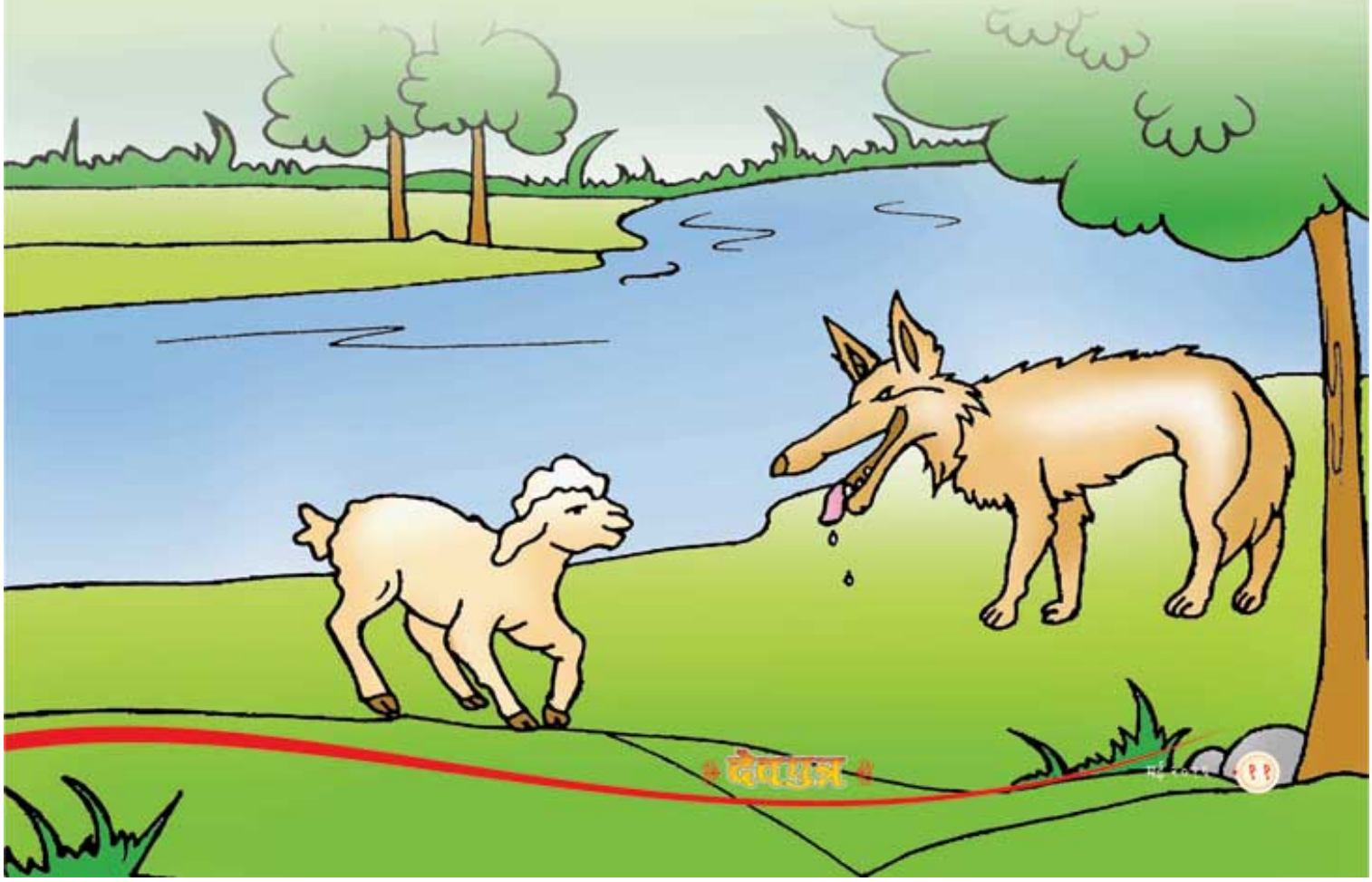

कहानी : डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'

कर्तव्य का एहसास

दीपेश अपने माता–पिता का इकलौता पुत्र था। उम्र थी दस–ग्यारह साल। वह तीसरी कक्षा का छात्र था। उसके पिता राजकीय सेवा में एक अच्छे पद पर कार्यरत थे और माँ पढ़ी–लिखी सुयोग्य गृहिणी। दीपेश की बुद्धि तो तेज थी लेकिन था वह बेहद लापरवाह। अपनी पढ़ाई की ओर लेशमात्र भी ध्यान नहीं देता था। हर समय

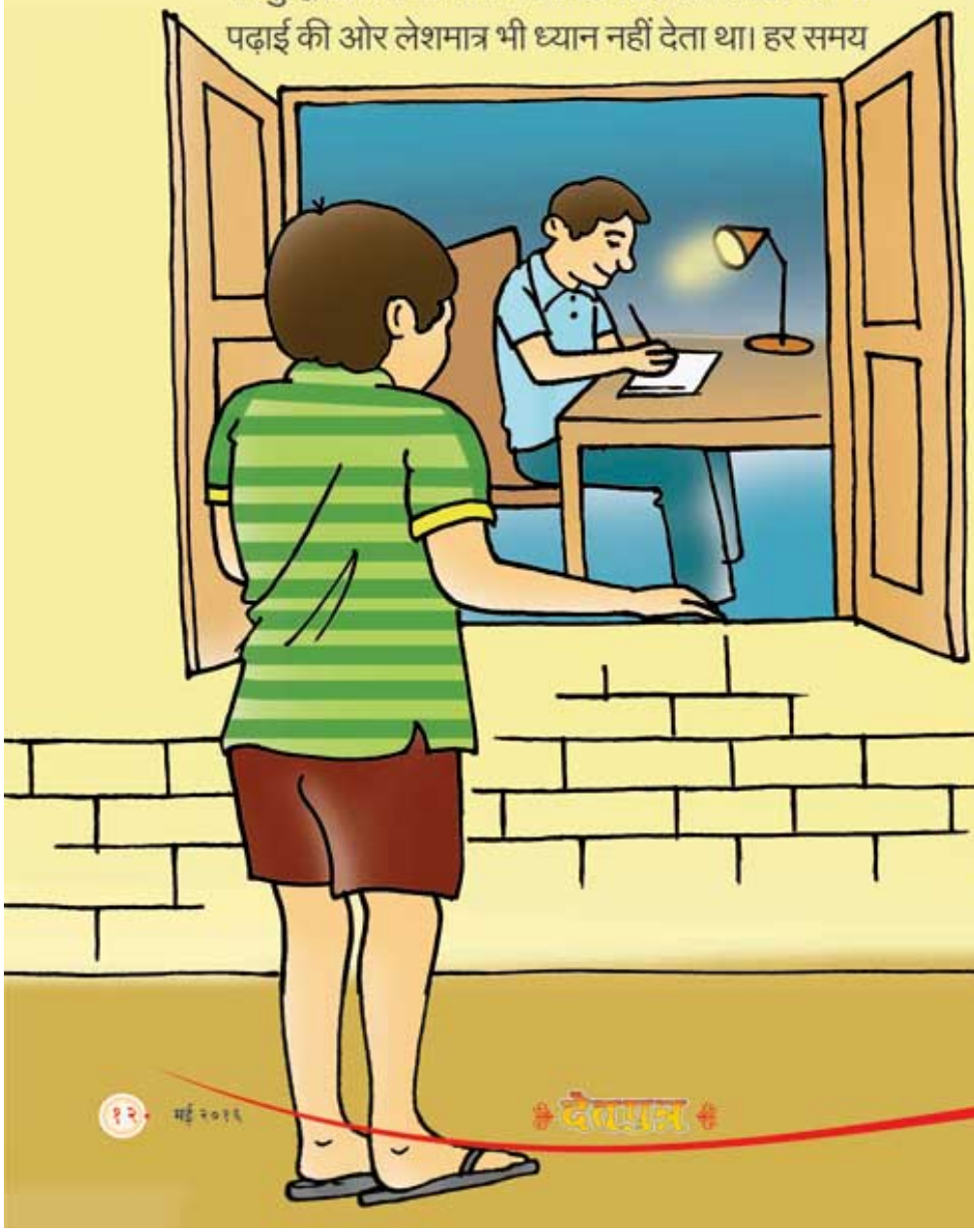

खेलने में ही मस्त रहता। उसका विद्यालय घर के पास ही था। फिर भी वह विद्यालय जाने के लिए तरह–तरह के बहाने बनाता था और कभी–कभी विद्यालय के अवकाश के पूर्व ही वह अकेला घर आ जाता था, जबकि उसकी माँ नित्यप्रति ठीक समय पर उसे विद्यालय छोड़ती और लेने भी जाती थी। वह अपना गृहकार्य भी स्वयं कभी नहीं करता था। विद्यालय में पिटाई की आशंका से माँ को ही विवश होकर उसका गृहकार्य करना पड़ता था, तो भी हस्तलेख उसमें दीपेश की न होने के कारण वह डाँटा–डपटा जाता ही था, परन्तु कहाँ तक? दीपेश सुनने–सहने का आदी हो गया तो शिक्षकों ने भी उसके मामले में चुप रहना स्वीकार कर लिया।

वह घर आते ही बस्ता एक ओर फेंककर खेल के साथियों की तलाश में आस–पड़ोस के घरों में भटकने लग जाता। माँ भोजन के लिए बुलाती, वह नहीं आता। साथी न मिलने पर कभी–कभी अपने पालतू कुत्ते से

ही खेलता रहता। भूख लगने पर दुकानों से अधिकतर कुरकुरे, चिप्स आदि खरीदकर खा लेता। माता–पिता अपनी संतान से परेशान थे। समझाने–बुझाने का उस पर कोई असर नहीं होता था। ज्योतिषियों व साधु–संतों से पूछने पर वे उसका भविष्य उज्ज्वल बताते थे। एक दिन वह पड़ोस में अपने सहपाठी शिखर के घर गया। शिखर अपने कमरे में दरवाजा बन्द कर पढ़ाई–लिखाई में व्यस्त था। खिड़की खुली थी। दीपेश कुछ देर तक खिड़की से उसे देखता रहा, शिखर ध्यान मग्न था। उसने खिड़की पर आहट की तो शिखर ने दीपेश की तरह एक हल्की सी दृष्टि घुमाई और पुनः अपने कार्य में जुट गया। ''काम बन्द करो। पता है, मैंने तो न खाना खाया और न गृहकार्य किया। कुरकुरे लाया हूँ। चल तू भी खाएगा और खेलेंगे।''

''अरे दीपेश ! मैं कुरकुरे नहीं खाता। कुरकुरे या दूसरे फस्टफूड गन्दे लोग खाते हैं। ये सब खाकर बीमार नहीं होना है, मैंने भोजन किया है और देख तू यहाँ से चला जा। मुझे पढ़ने दे। मैं केवल खेलने के समय ही खेलता हूँ– शाम को एक घण्टा। तेरी तरह हर समय खेलने लग गया तो हो गई पढ़ाई। तू जा बोल मत।'' शिखर ने अपनी जगह पर बैठे–बैठे ही उस ओर देखकर कहा। उसकी बातें सुनकर दीपेश कुछ चिंतन सी मुद्रा में वहाँ से चला गया। चंचल दीपेश उस समय कुछ गम्भीर दिख रहा था। सड़क में आकर एक पेड़ के नीचे बैठ गया। सड़क के एक ओर खुली जगह थी, वहाँ कुछ खेत थे। उनमें मटर, भिण्डी आदि सब्जियाँ तैयार दिख रही थीं। एक ओर पानी का टैंक बन रहा था, जिसमें मिस्त्री और मजदूर तल्लीन होकर काम कर रहे थे। थोड़ी दूरी पर चिड़ियाँ फुदक–फुदकर दाने चुन रही थीं। दीपेश सोचने लगा–सभी अपने–अपने काम में लगे हुए हैं।

वहाँ से चलकर उसने अपने एक अन्य सहपाठी मुकुल के पास जाने की ठान ली। वह उसके घर पहुँचा। बरामदे में मुकुल की माँ सिलाई का काम कर रही थीं। दीपेश ने उन्हें प्रणाम कर मुकुल के विषय में पूछा। मुकुल की माँ ने कहा–''बेटा, वह तो अन्दर कमरे में पढ़ाई कर रहा है। आप वहाँ जाना भी नहीं। अन्यथा उसका मन पढ़ने में नहीं लगेगा। इस समय अपने घर जाओ, पढ़ाई करो।''

''पर मैं तो खेलना चाहता हूँ। क्या खेलना बुरा है?'' दीपेश तपाक से बोला। उसकी बात सुनकर मुकुल की माँ मुस्कुराती हुई प्रेम से बोली–''बेटे, खेलना कतई बुरा नहीं है, अच्छा हैं, लेकिन खेलने का एक समय होना चाहिए। विद्यालय की पढ़ाई–लिखाई का काम मन लगाकर पूर्ण कर लेने के बाद शाम को एक–डेढ घण्टे खेलना अच्छी बात है और बच्चों को खेलना भी चाहिए, इसलिए अभी तुम जाओ। बाद में आना।''

मुकुल की माँ की बात सुनकर दीपेश की आँखें खुल गई। वह वहाँ से घर चला आया। वह गुमसुम सा अपने कमरे में जाकर पुनः सोचने विचारने लगा–कोई बेकार घूमता–फिरता या खेलता कूदता नहीं दिखता, कहीं नहीं। तब मैं ही क्यों खेलने के लिए भटक रहा हूँ। उसने अपना बस्ता खोल लिया। अब उसे भी अपने कर्त्तव्य का एहसास हो गया था उसने मन लगाकर नियमित रूप से पढ़ने–लिखने का प्रण किया। तब से वह अपने कर्त्तव्य में जुट गया। अपने बेटे में आश्चर्यजनक सुधार देखकर उसके माता–पिता ने खुश होते हुए भगवान को धन्यवाद दिया। आगे चलकर दीपेश एक महान वैज्ञानिक बना।

देवपुत्र प्रश्नमंच

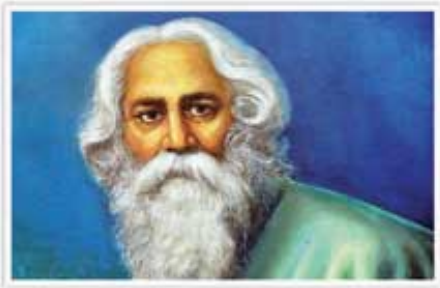

(१) रवीन्द्रनाथ ठाकुर को 'गुरुदेव' यह सम्बोधन सर्वप्रथम किसने दिया था।
(अ) रोम्यारोला
(ब) महात्मा गांधी
(स) स्वामी विवेकानंद

(२) रवीन्द्रनाथ की किस कृति पर उन्हें नोबुल पुरस्कार मिला था।
(अ) पथेर पांचाली
(ब) आनन्दमठ
(स) गीतांजली

(३) भगवान बुद्ध के उपदेशों का संग्रह कहलाता है।
(अ) त्रिपिटक
(ब) धम्म संग्रह
(स) भगवद्गीता

(४) भगवान बुद्ध को किस स्थान पर ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।
(अ) लुम्बिनी
(ब) सारनाथ
(स) गया

(५) पौराणिक देवर्षि नारद की एक उपाधि है।
(अ) आद्य संपादक
(ब) आद्य संवाददाता
(स) आद्य ऋषि

(६) आद्य शंकराचार्य का जन्म स्थान है।
(अ) कालडी (केरल)
(ब) रामेश्वरम् (तमिलनाडू)
(स) द्वारिका (गुजरात)

(७) लोकमाता अहिल्या बाई की कर्मस्थली रहा प्रमुख नगर है।
(अ) उज्जैन
(ब) काशी
(स) महेश्वर

(८) सावरकर जी को सम्मानपूर्वक पुकारा जाता है।
(अ) क्रान्तिवीर
(ब) स्वातन्त्र्यवीर
(स) महावीर

(९) महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के आराध्य थे।
(अ) श्री कृष्ण
(ब) श्री राम
(स) श्री हनुमान

(१०) श्री कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन जिनकी रचनाओं का मुख्य विषय था।
(अ) मीरा बाई
(ब) रविदास
(स) सूरदास

(उत्तर इसी अंक में।)

सीधी राह उन्हें सिखाती

कविता : दिविक रमेश

यूँ तो माँ तुम बड़े प्यार से
कहती मुझको राजा बेटा
पर तुमको तो इत्ता सा भी
डर क्यों ना फिर मुझसे लगता?
हो जाती गलती जो मुझसे
कान ऐंठ देती हो मेरे
राजा हूँ तो भला बताओ
कान ऐंठती क्यों हो मेरे?
माँ बोली मैं नहीं चाहती
गंदे राजाओं सा बेटा
भला आदमी बस पहले हो
मेरा तो तू राजा बेटा
माँ मैं सोचू यदि माँ होती
राजाओं की भी तुम जैसी
तो गलती पर कान ऐंठ कर
सीधी राह उन्हें सिखाती।

● नोएडा (उ.प्र.)

पहेलियाँ

माणकचंद गेहलोत

दो भाई ऐसे जुड़वां,
नहीं वह छोटा-बड़ा।
कभी न चलते साथ,
फिर भी रहते हमेशा साथ।

काली है पर काग नहीं,
लम्बी है पर नाग नहीं।
मर्दों की है वह पहचान,
देते मर्द उसको तान।

एक नागिन इतनी बड़ी,
बने जब, मिले कड़ी से कड़ी
बन्धन को वह आए काम
जल्दी बताओ उसका नाम।

(उत्तर इसी अंक में)

कहानी : बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान'

सिक्कों का आन्दोलन

गर्मी की एक दोपहर को दादी ने अपनी पैसों की पिटारी खोली तो सिक्कों ने उछलकर बगीचे में जुटना शुरु कर दिया। सभी के हाथ में छोटे-छोटे बोर्ड भी थे। उस पर तरह-तरह के नारे लिखे हुए थे।

एक पैसे का सिक्का अपने हाथ में एक बोर्ड लिए था बोर्ड पर लिखा था- 'जिसने हमें बंद किया वह सरकार निकम्मी है।' दो पैसे के सिक्के के हाथ में लिए बोर्ड पर लिखा था 'हमारी चलन फिर से शुरु करो।' तीन पैसे का सिक्का अपने हाथ में लिए था-'हमारी मांगें पूरी करो।' पांच पैसे के सिक्के ने हाथ में लिए बोर्ड पर लिखा था-'हमे जिसने बन्द किया वह सरकार धोखेबाज है।' दस पैसे का सिक्का बोर्ड लिए था हमसे जो टकराएगा मिट्टी में मिल जाएगा।

बीस पैसे के सिक्के के बोर्ड पर लिखा था-'हमें भी चलने का हक दो।' पच्चीस पैसे का सिक्का अपने हाथ में लिए बोर्ड लिए था- 'हम अपना हक लेकर रहेंगे।' देखते ही देखते बगीचे में कई हजार की संख्या में छोटे बन्द हुए सिक्के आ कर जमा हो गए और सभी एक साथ जुलूस के रूप में नारा लगाते सड़क पर निकल पड़े। पच्चीस पैसे का सिक्का नारा लगा रहा था। हमको जिसने बन्द किया वह सरकार निकम्मी है। हमारी मांगें पूरी करो। फिर से हमारा चलना शुरु करो। हम अपना हक ले कर रहेंगे। किसी से हम नहीं डरेंगे। पच्चीस पैसे का सिक्का जो भी नारा लगाता उस नारे को दूसरे सिक्के दोहरा रहे थे। छोटे सिक्कों का जुलूस देखकर सारे सरकार के मंत्री और सरकारी अधिकार घबरा गए। कोई सिक्का किसी से बात नहीं कर रहा था।

एक चौराहे पर पहुँच कर सारे सिक्कों ने जमीन पर बैठकर रास्ता जाम कर दिया।

तभी सरकार के वित्त मंत्री ने एक पांच और दस रुपए

के कुछ सिक्कों को किसी तरह सुलह समझौता कराने के लिए छोटे सिक्कों के पास भेजा। ताकि छोटे सिक्कों का आन्दोलन प्रदर्शन दूसरे शहरों में न फैल सके।

छोटे सिक्कों का नेता पच्चीस पैसे का सिक्का जमीन पर बैठा हुआ था। तभी एक पांच और दस रुपए के सिक्के पच्चीस पैसे के सिक्के के पास आ कर पूछने लगे। ''तुम सब क्या चाहते हो तुम्हारी मांगें क्या हैं?''

एक पांच दस रूपए के सिक्के की बात सुनकर पच्चीस पैसे का सिक्का बोला–''क्या तुम हमारी मांग पूरी कर सकोगे?''

''हाँ जरूर पूरी करेंगे। क्योंकि सरकार के वित्तमंत्री ने हमें यहां सुलह समझौता कराने के लिए भेजा है।'' पच्चीस पैसे का सिक्का बोला हमारी बस एक मांग है। हम छोटे सिक्कों को फिर भी तुम सब बड़े सिक्कों की तरह चलन में आ जाए।''

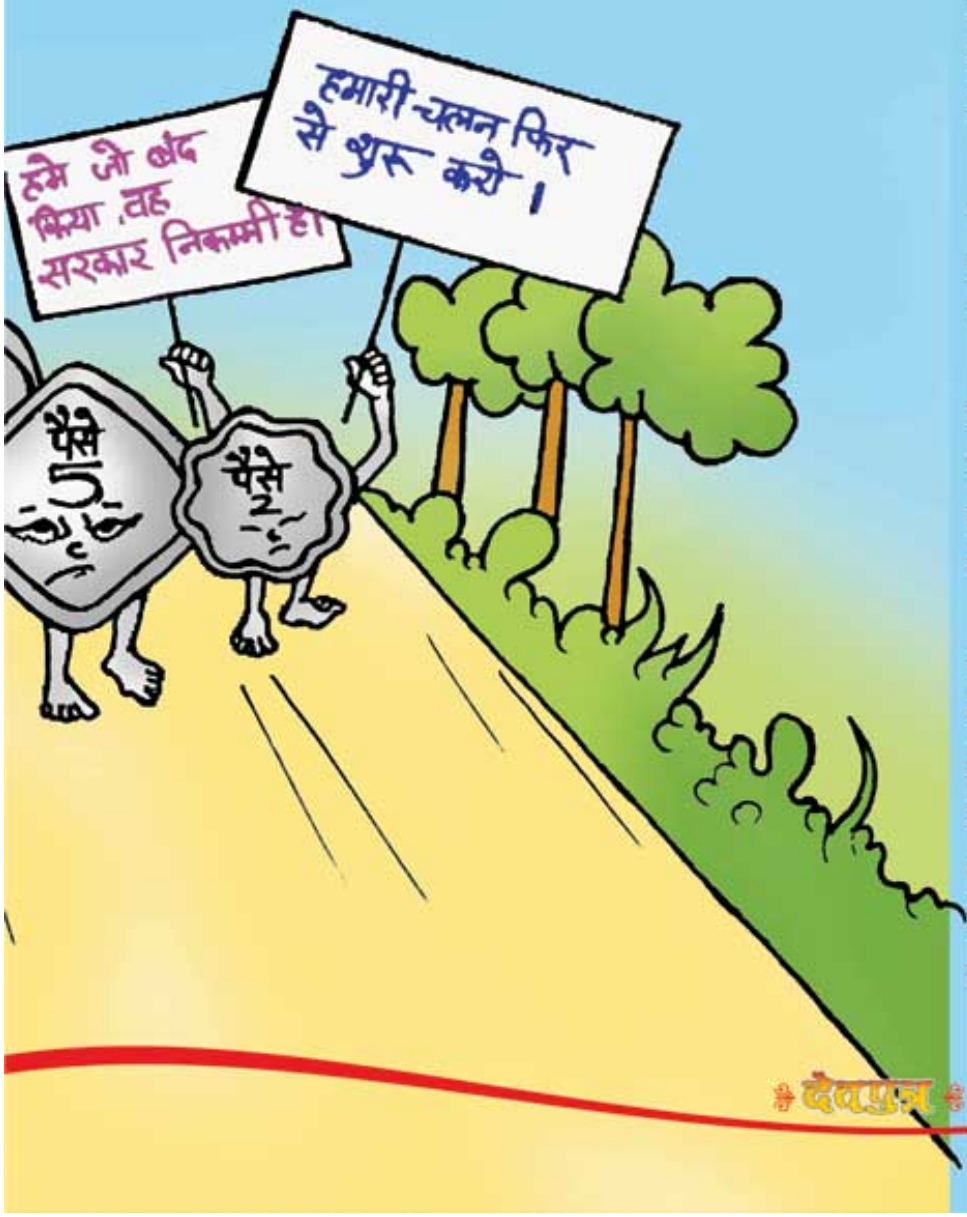

''तुम्हारी मांग तो जायज है मगर सरकार की कुछ मजबूरी ऐसी आ गई कि छोटे सिक्कों का चलन बंद करना पड़ा। वैसे इस मंहगाई के दौर में एक पैसे दो पैसे तीन पैसे पांच पैसे दस पैसे बीस पैसे का और पच्चीस पैसे का क्या मिलने वाला है। एक लाली पॉप और चाकलेट भी तो नहीं मिल पाएगी।

अब तुम्ही बताओ सरकार तुम्हे चला कर क्या करेगी? इस मंहगाई के दौर में तुम सबको ढालने में कई गुना खर्च आ रहा है। सरकार इस घाटे को कैसे बर्दाश्त कर पाएगी?''

''मुझे तो लोगों ने पिघला कर नकली आभूषण ही बना लिए।'' सुबकते हुए बीस के सिक्के की बात अनसुनी रही।

''हाँ हाँ आप की बात शत प्रतिशत सही है। मगर हमारे अस्तित्व को कायम रखने के लिए सरकार को कुछ करना ही पड़ेगा। ताकी हमारा नाम और इतिहास मिटने न पाए।

दस का सिक्का बोला–''तुम सब की मांगें उचित हैं। इसलिए हमारी सरकार का कहना है कि छोटे सिक्कों का हर शहर में एक एक संग्रहालय बनाया जाएगा। इससे तुम सब को दूर दूर से पर्यटक देखने को आएंगे और तुम सब के बारे में में सारा इतिहास भी जानेंगें।

अगर तुम सबको हमारी बात

मंजूर है तो हाँ बोलो वर्ना जो मन में आए वही करो।''

दस रुपए के सिक्के की बात सुनकर सभी छोटे सिक्के बोल पड़े। ''हां, हम सबको आप की बात मंजूर है। मगर हम सब का संग्रहालय कब तक बन जाएगा?'' इस बारे में भी हमें बता दीजिए।''

कम से कम एक साल का समय हमें दीजिए। ''दस का सिक्का बोल पड़ा।

अगर हमारे लिए एक साल में संग्रहालय नहीं बना तो हम क्या करेंगे?'' पच्चीस पैसे का सिक्का पूछ पड़ा।

अगर सरकार ने तुम्हारे लिए एक साल में संग्रहालय नहीं बनवाए तो फिर जो चाहे वह करना। हम सब भी तुम्हारा साथ देंगे। एक पांच और दस के सिक्के एक साथ बोल पड़े।

समझौता होने के बाद सभी छोटे सिक्के हंसते उछलते हुए पुनः दादी के पास आ गए।

दादी मुस्करा कर बोली–''मैंने सुनी है तुम्हारी मांगें पर सोचो जरा समय के साथ हर चीज की कीमत घटती बढती या नष्ट हो जाती है। फिर भी घबराओ मत सरकार करे या न करे बच्चे जरूर रखेंगे तुम्हें निजी संग्रह में।''

बाल प्रस्तुतीः प्रतिभा

सृजन करें

धरती कहती, अंबर कहता,
कहते नभ के तारे हैं।
आसमान में उड़ने वाले
पंछी लगते प्यारे हैं।
तुम भी भैया पंख लगा लो
मुक्त गगन में उड़ने को,
छू लेना नभ की ऊँचाई,
भला किसी का करने को।
आज ईर्ष्या द्वेष बढ़ा है,
अपने ही भीतर घर में।
रिश्ते नाते बिखर गए सब,
अपने अनुपम आँगन में,
नदियाँ झरने, बाग, बगीचे
सूख गए कुछ उजड़ गए
आओ हम सब मिलकर उनको
चमन करें नव सृजन करें।

● शाहपुरा (राज.)

जानो पहचानो

- १५ वर्ष की अवस्था में उन्होंने समस्त शास्त्रों का अध्ययन कर लिया था।
- 'गुरुदेव जन जन में मोक्ष के बदले मैं अकेला नरकवास को उचित समझता हूँ।' कहकर गुरु द्वारा दिए गोपनीय मंत्र को सर्वसाधारण को सुना दिया। वे ऐसे लोक उपकारी थे।
- उनकी परोकार भावना से गुरुदेव प्रभावित हो उठे और कहने लगे 'तुम विष्णु के अंश हो आज से तुम मेरे गुरु हुए।'
- उन्होंने कांचीपूर्ण नामक तथा कथित छोटी जाति के व्यक्ति को गुरु बनाया और शूद्र कहे जाने वाले धनुरदास को शिष्य, ऐसा सामाजिक समरसता का महान संदेश दिया।
- उन्होंने यदुगिरि के मंदिर में सभी वर्ण एवं जाति के लोगों को प्रवेश दिलवाया।
- ४ अप्रैल १०१७ को दक्षिण भारत में जन्मे यह महान आचार्य कौन थे?

(उत्तर इसी अंक में।)

कविता बनाइए १७

बच्चो! आमों का रसभरा मौसम और उनसे भी रसीली छुट्टियाँ तो क्यों न इस बार कविता बनाई जाए आमों पर। आपको 'मीठे मीठे आम' शब्द लेकर चार खट्टीमीठी पंक्तियाँ बना कर भेजना हैं। चयनित कविता प्रकाशित होगी जुलाई अंक में।

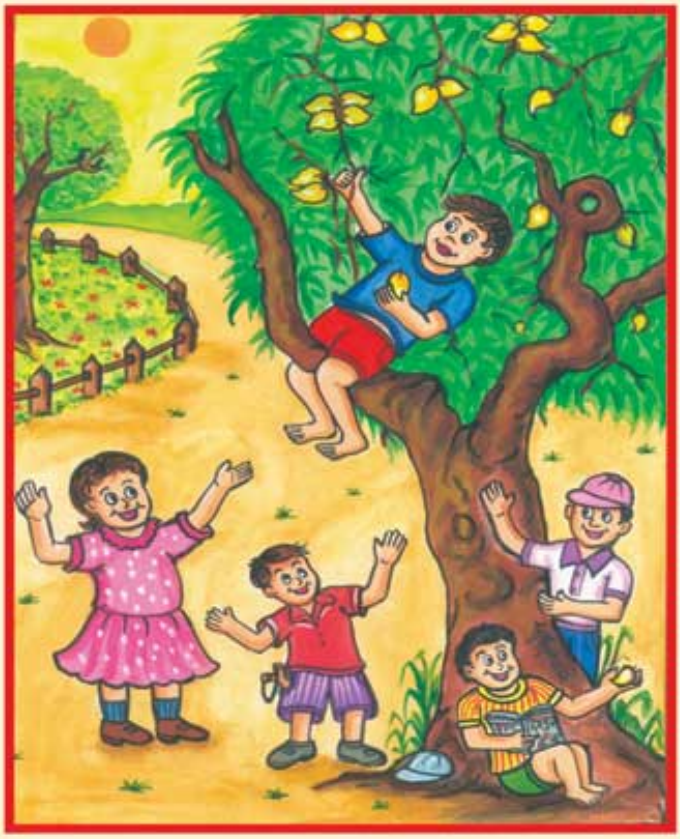

कहानी : डॉ. मालती शर्मा 'गोपिका'

लक्कड़ बाबा

इस तीन लोक से न्यारी काशी के एक आचार्य से 'लक्कड़ बाबा' बने वेदों के निष्णात विद्वान भी तीन लोक से न्यारे थे। वे हमेशा अपने मुँह में लकड़ी दबाए लगाए रहते, सिर्फ भोजन करने के लिए ही लकड़ी निकालते थे। इसका कारण उनके जीवन में घटी, शास्त्रों के लोक कल्याणकारी भविष्य निर्माता पक्ष की एक अपूर्व उद्‌बोधक घटना है।

उन दिनों १३वीं १४वीं शताब्दी में वाराणसी वेद विद्या और धर्म शास्त्रों के ज्ञान का केन्द्र, समस्त ज्ञान का गढ़ मानी जाती थी। उपनयन होने के बाद हर किशोर युवा काशी जाकर शिक्षा पाना चाहता था। उपनयन के हमारे लोकगीत इसका प्रमाण हैं।

काशी में शिक्षा पाए विद्वान पंडितों का देशभर में मान

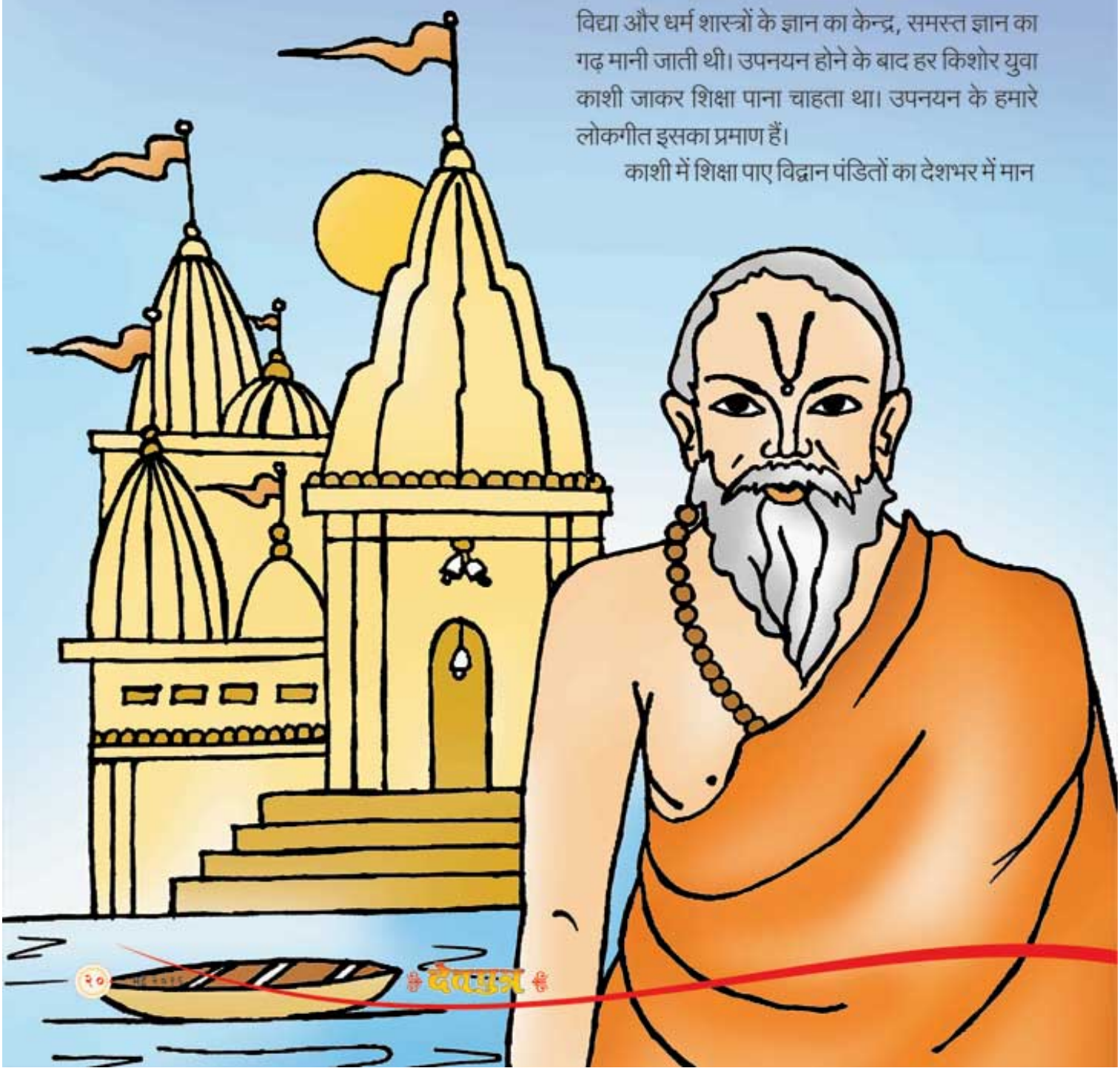

था। देश की चारों दिशाओं से विद्वान पंडित अपने शास्त्र ज्ञान पर प्रमाणिकता की मुहर लगवाने काशी के आचार्यों से शास्त्रार्थ करने आया करते थे।

एक बार दक्षिण से एक विद्वान पंडित वाराणसी शास्त्रार्थ करने आया ओर उस समय के निष्णात आचार्य लक्कड़ बाबा से शास्त्रार्थ में पराजित हो गया। हारने पर उसे इतनी ग्लानि हुई, अपने देश पराजित हो लौटने की अपेक्षा उसने गंगा में डूब जीवन का अंत करने की सोची। जल समाधि का निर्णय लिया।

यह खबर आचार्य लक्कड़ बाबा तक पहुँची। सुनकर के वे थोड़ा चकित हुए ''ऐसा!'' आचार्य जी ने कहा ''उसे मेरे पास लाओ।'' बड़ी कठिनाई से लोग उसे लाए।

आचार्य जी ने कहा–''यह क्या? तुम एक ८० वर्ष के बूढे के ज्ञान से पराजित हुए हो, मैंने ८०वर्ष की आयु में जो पाया है उससे कई गुना अधिक, ज्ञानर्जन की, शास्त्रों के अध्ययन मनन, चिंतन की आयु तुम्हारे सामने हैं। वत्स! यह आत्महत्या या जल समाधि तुम्हारी वास्तविक पराजय है । इससे तुम्हारी पराजय का कलंक नहीं धुलेगा। दुनिया कायर कहेगी। यह जान लो कि असफलता सफलता की सीढ़ी है।'' शास्त्रों का आचरण तुम्हें स्वयं आचार्य बनाएगा। आचार्य जी के समझाने से दक्षिणी विद्वान उनके चरण स्पर्श कर जल समाधि का विचार छोड़ गहन अध्ययन और आचरण का संकल्प लेकर चला गया।

लेकिन आचार्य जी को इस घटना से बहुत क्षोभ हुआ। उनका मन कचोटने, कहने लगा– ''शास्त्रार्थ ज्ञान का यह कैसा परिणाम होने जा रहा था? यह ज्ञान तो ज्ञान की भावी वृद्धि उन्नति की संभावना, उसका भविष्य ही नष्ट करने चला था। ज्ञान के भविष्य की संभावना जल समाधि ले रही थी तो इस जीभ के तर्कों के कारण। मेरा शास्त्रार्थ उस युवा पंडित की कमियों का निर्देश करने के साथ उसमें उन्हें दूर करने की चेतना न जगा सके, उसे आत्म बल दे। दिशा निर्देश न कर सके उल्टे इनती ग्लानि दी कि वह मरने चला तो इस मुँह और जीभ से निकले शास्त्र के कारण।

मेरा आचार्यत्व खंडित हुआ है। ऐसा शास्त्रार्थ क्यों? और उन्होंने निर्णय किया अब इस मुँह–जीभ को यही दंड है कि शेष जीवन मुँह ही नहीं खोलूँगा जिससे फिर ऐसी स्थिति न आए। आचार्य जी ने अपने मुँह में आडी लकड़ी पकड़ ली और लक्कड़ बाबा के नाम से विख्यात हो गए।

• पूणे (महा.)

पहेली : चूं चूं की जोड़ी

क्या आप बता सकते हैं कि इस चित्र में कौन-सी दो चिड़िया बिलकुल चूं-चूं चिड़ियां जैसी हैं?

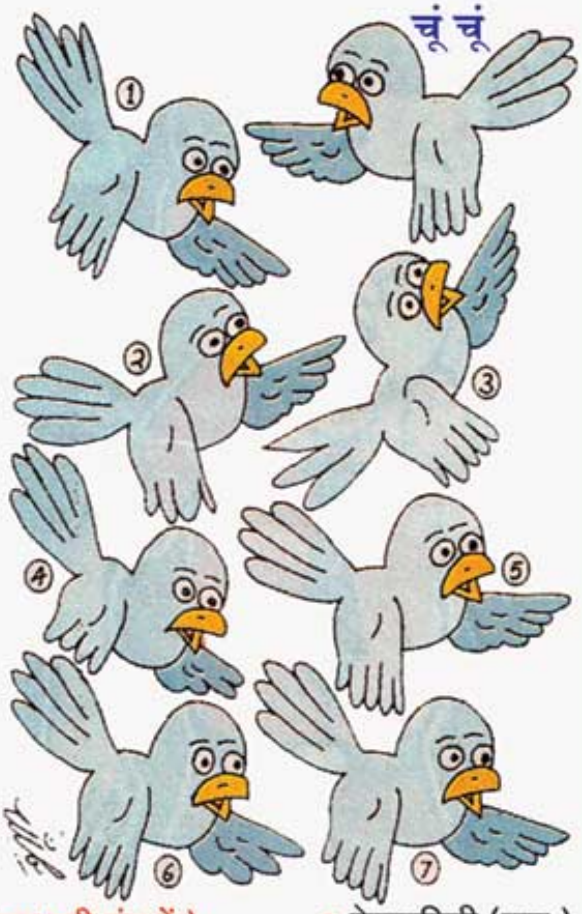

(उत्तर इसी अंक में।)

• मेड़तासिटी (राज.)

रसगुल्ले

कविता : लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'

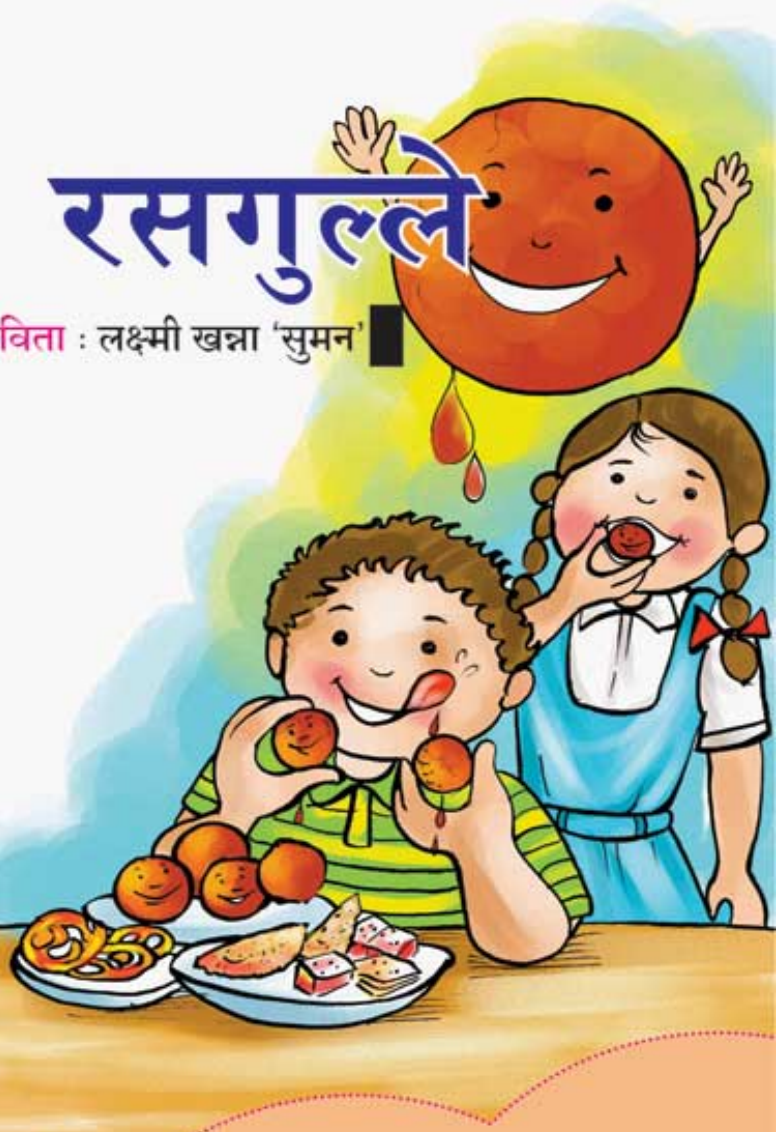

छुटके मुटके गोरे-गोरे रसगुल्ले
मीठे-मीठे, रोले पोले रसगुल्ले

सूखे-सूखे लड्डू पेड़े और बरफी
छेने वाले रस के डोले रसगुल्ले

गर्म जलेबी गर्म है गाजर का हलवा
हम है ठंडे-ठंडे, बोले रसगुल्ले

होली पर थी गुजिया की तो धूम मची
पर अम्मा ने साथ परोसे रसगुल्ले

कुछ तो खाने काट-काट कर जरा-जरा
पर साबूत तो रस गोले रसगुल्ले

आइस्क्रीम खिलाई सब को बापू ने
पर दादी ने माँगे पोले रसगुल्ले

बूढों को बच्चों को अच्छे लगें सुमन
चखे छोरियाँ, खाएँ छोरे रसगुल्ले

• गुरुग्राम (गुड़गाँव) (हरियाणा)

सही उत्तर

देवपुत्र प्रश्नमंच

(१) ब (२) स (३) अ (४) स (५) ब
(६) अ (७) स (८) ब (९) अ (१०) स

बाल पहेलियाँ

(१) श्री गणेश
(२) भक्त प्रल्हाद
(३) श्री हनुमान

हमारे राज्य पुष्प

मणिपुर का राज्य पुष्प: शिरॉय लिली

डॉ. परशुराम शुक्ल

मणिपुर में पाया जाता है,
पौधा बड़ा निराला,
मई जून में खिलता इस पर,
फूल एक मतवाला।
चीन, कोरिया, बर्मा में भी,
कहीं कहीं मिल जाता।
लेकिन अलग-अलग फूलों में,
अन्तर पाया जाता।
रंग गुलाबी हल्का गहरा,
सबके मन को भाता।

घंटी जैसी पंखुड़ियों से,
अपना रूप सजाता।
इस पौधे का आसपास से,
बड़ा अनोखा नाता।
कई हुए तो लम्बा जीवन,
एक जल्द मर जाता।
जंगल के कटने से इस पर,
संकट गहरा आया।
राजकीय की पदवी दे कर,
सबने इसे बचाया।

● भोपाल (म.प्र.)

भूगोल के क्षेत्र में कॅरियर के चमकीले अवसर

प्रो. जयंतीलाल भण्डारी

भूगोल को सोशल साइंस में सबसे तेजी से उभरने वाली ब्रॉंच का दर्जा दिया गया है। यह समाज और प्रकृति के बदलाव की पल-पल की जानकारी लोगों को मुहैया कराता रहता है। भूगोल सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिवेश में आने वाली चुनौतियों के वस्तुनिष्ठ अध्ययन एवं विश्लेषण में मददगार है। भूगोल का अध्ययन दिलचस्प होने के साथ-साथ विविधता से भी भरा हुआ है। अध्ययन ही नहीं करियर के लिहाज से भी देखें तो इसमें तरह-तरह के रोजगार के अवसर है। पहला अवसर प्लानिंग के स्तर पर है। आज क्षेत्रीय प्लानिंग हो या शहरी या फिर ग्रामीण प्लानिंग इनसे जुड़े संस्थानों में भूगोल के छात्रों की खोज प्लानर के रूप में सदा रहती है।

भूगोल की पढ़ाई के दौरान मुख्यतः तीन चीजें बताई जाती है। पहला डाटा तैयार करना, दूसरा उसे ग्राफ या मैप में कैसे बदलना और तीसरा मैपिंग का काम। किसी भी सूचना को कम्प्यूटर के जरिए ग्राफ या मैप में कैसे बदलना है, यह भूगोल के छात्रों को बखूबी बताया जाता है। भूगोल सामाजिक विज्ञान और समग्र अध्ययन में महत्वपूर्ण कड़ी है। इसके तहत समाज के राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक, सभी पहलुओं को देखा व समझा जाता है। समाज की ही नहीं, व्यापक तौर पर कहें तो विश्वस्तर की समस्याओं का हल भूगोल के दायरे में ही होता है। इसमें सभी डिसिप्लिन एकीकृत होते हैं और सभी का समेकित रूप से अध्ययन भी किया जाता है।

तकनीक के लिहाज से भी भूगोल को देखें तो इसमें स्पेशल इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी काफी महत्वपूर्ण है। इसमें तीन चीजे हैं। सुदूर संवेदन, जिसने भूगोल जगत में क्रांति ला दी है, यह एक अन्य स्तर पर डाटा का अध्ययन है। चाहे प्रादेशिक डाटा हो या ऐतिहासिक, कृषि का क्षेत्र हो या शहरी या फिर वन क्षेत्र सभी तरह के डाटाओं का अध्ययन भूगोल में किया जाता है। इस तरह के कामों के लिए विभिन्न कंपनियाँ छात्रों को अपने यहाँ नौकरी पर रखती हैं। भूगोल के छात्रों की जरूरत सामाजिक व आर्थिक डाटा तैयार करने में भी पड़ती है। किसी भौगोलिक क्षेत्र में बसे हुए लोगों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का आकलन करने में भी ये खासे मददगार साबित होते हैं। इसलिए विभिन्न तरह के स्वयंसेवी संगठन यानी एनजीओ इन्हें अपने यहाँ काम पर रखते है।

भूगोल के क्षेत्र में टेक्नोलॉजी की दखल भी खूब है। इसके तहत भूगोल में रिमोट सेंसिंग व जीआईएस बहुत लोकप्रिय हो रहा है। देश के विभिन्न हिस्सों में कभी बाढ़ तो कभी सूखा पड़ता है। सैटेलाइट के जरिए इसका अध्ययन करने की कला भूगोल के छात्रों को कोर्स के दौरान सिखाई जाती है। वे घटनास्थल या आपदा वाली जगह का अध्ययन करते हैं। भूगोल में रिमोट सेंसिंग और जीआईएस में स्पेशलाइजेशन रखने वाले छात्रों के लिए इसरो और रिमोट सेंसिंग एजेंसी में काम करने का मौका मिलता है। भूगोल के छात्रों के लिए डिफेंस व एनेलिटिकल विंग में भी काम करने का मौका है। यहाँ किसी भी जगह या लोकेशन का अध्ययन करने के लिए इनकी जरूरत पड़ती है।

तोप या टैंकर किस ढलान पर जा सकता है। इंजीनियर तकनीकी ज्ञान तो रखता है, भौगोलिक नहीं। सेना की लड़ाई में

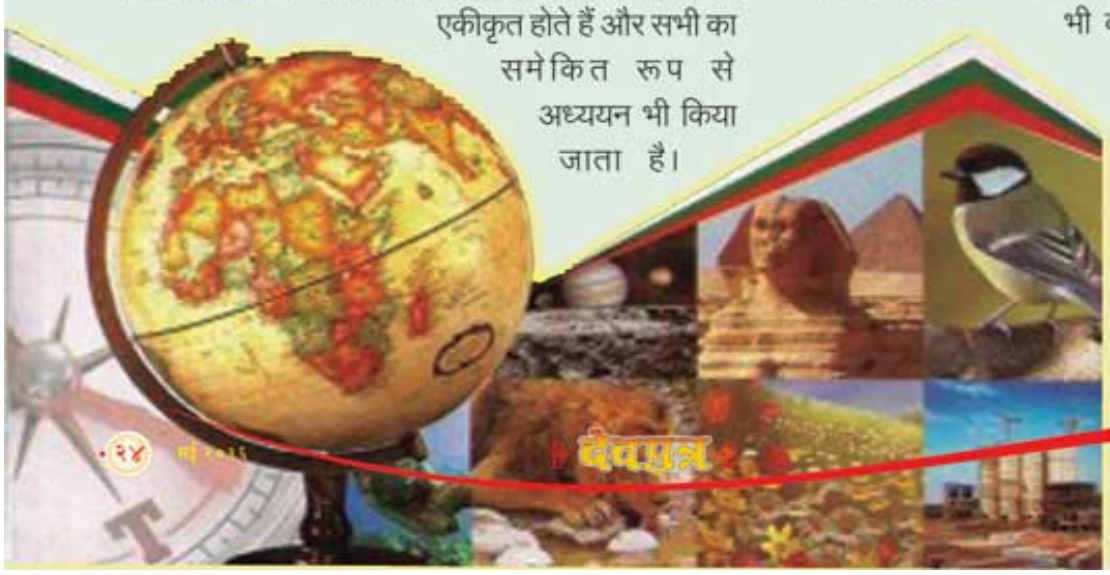

भौगोलिक स्थिति की जानकारी भी रखनी पड़ती है। लड़ाई की जगह की भौगोलिक स्थिति बताने में ऐसे छात्र सेना के मददगार होते हैं। भूगोल के छात्रों के लिए टूरिज्म में भी रोजगार के अवसर हैं। जहाँ इतिहास का छात्र ऐतिहासिक स्थलों का गाइड बनता है, वहीं भूगोल के छात्र ईको टूरिज्म में कॅरियर बना सकते है। बायोडाइवर्सिटी पार्क आज काफी लोकप्रिय हो रहे हैं। इनका दौरा कराने और उनके बारे में रोचक जानकारी देने के लिए भूगोल विषय के छात्र मददगार होते हैं। इसी तरह चिड़ियाघर या किसी अभयारण्य के लिए भी ऐसे छात्र पर्यटकों के गाइड बनते हैं। मसलन काजीरंगा में किस तरह का जंगल हैं, वहां किस तरह के जीव-जन्तु हैं, मौसम कैसा है, इस तरह की जानकारी देने के लिए भूगोल के छात्रों को गाइड के रूप में नियुक्त किया जाता है। चुनाव के कामों में भी विशेष तरह के डाटा संकलन के लिए भूगोल के जानकारों की जरूरत पड़ती है। महानगर ही नहीं, लेकिन छोटे-छोटे अंचलों में मतदाताओं की प्रकृति और सर्वेक्षण के काम में ये उपयुक्त साबित होते हैं। मौसम विभाग में भी आने वाले दिनों में भूगोल के छात्रों के लिए अवसरों की कमी नहीं है। इस विषय के छात्र मौसम का पूर्वानुमान और भविष्यवाणी करते हैं।

इस विषय की पढ़ाई करने वालों के लिए स्कूल-कॉलेजों मे शिक्षण के भी ढेरों अवसर हैं। बीए, एम.ए. व बीएड. करने के बाद स्कूल शिक्षक और एमफिल तथा पी-एच.डी करने पर कॉलेजों में अध्यापन का मौका मिलता है। एमए. के स्तर पर भूगोल में कई तरह के स्पेशलाइजेशन हैं, जो कॅरियर की अलग-अलग राह दिखाते हैं। किसी को यह विषय रिमोट सेंसिंग और जीआईएस में ले जाता है तो किसी को मौसम के क्षेत्र में। डिझास्टर मैनेजमेंट का क्षेत्र भी भूगोल के छात्रों के लिए खुला हुआ है। प्राकृतिक आपदाओं के प्रबंधन में ऐसे छात्रों के लिए काफी अवसर हैं। इसी तरह कोस्टल जोन मैनेजमेंट में भी काम करने का मौका है। समुद्र तटीय स्थिति की विशेष जानकारी रखने वाले इस क्षेत्र में भी काम कर सकते हैं। बीए. करने के बाद विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने का अवसर तो मिलता है, संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में भी इस विषय के छात्र काफी सफल होते है। सिविल सर्विस के लिए भूगोल एक उपयुक्त व लोकप्रिय विषय है। इसे ध्यान में रखते हुए भी बहुत सारे छात्र बी ए. में इस विषय का चुनाव कर रहे हैं।

भूगोल के छात्र स्नातक करने के बाद एनजीओ में अपना बड़ा योगदान दे सकते हैं। उनके लिए एनजीओ में कई तरह के अवसर है। एनजीओ व समीक्षा में अपनी भूमिका अदा कर सकते हैं। इनके लिए कॅरियर का एक और विकल्प स्कूली व उच्च शिक्षा में भी है। डेमोग्राफी और मौसम विज्ञान के आँकड़ों का विश्लेषण व परिणाम निकालने के काम में भी इन छात्रों को अवसर प्रदान किया जाता है। प्राकृतिक संसाधन के तहत इसका आकलन, दोहन और भविष्य के उपयोग के लिए दीर्घकालीन कार्यवृत्ति बनाने में सहयोग के रूप में भूगोल के छात्र कारगर भूमिका निभाते हैं। भूगोल सोशल साइंस की फास्टेस्ट इमर्जिंग ब्रांच यानी सबसे तेजी से उभरने वाली शाखा है। इसमें कॅरियर की बात करें तो बीए. एमए. के बाद स्पेशालाइज्ड फील्ड में ढेरों अवसर हैं। मसलन, आज शहर और गाँव उद्योग जगत में प्लानिंग के लिए प्लानर की जरूरत पड़ती है। भूगोल के छात्र इसमें कफी दक्ष माने जाते हैं। वे सूचनाओं को लेकर जल्द से जल्द प्लान तैयार कर देते हैं। प्लान की मैपिंग कर देते हैं। इस तरह से आधुनिक इंटरप्रेटेशन के लिए विभिन्न तरह की कंपनियाँ भूगोल के छात्रों को अपने यहाँ काम पर रखती है। एकेडमिक क्षेत्र में सामाजिक व आर्थिक डाटा इकट्ठा करने के लिए भूगोल के छात्रों को काफी महत्व दिया जाता है। ऐसे महत्वपूर्ण विषय में नौकरी और शोध के काफी अवसर हैं। आज भूगोलवेत्ता रिमोट सेंसिंग एजेंसी, मैप एजेंसी, खाद्य सुरक्षा, कार्बन तथा ऊर्जा सुरक्षा, जल सुरक्षा, बायोडायवर्सिटी जैसे क्षेत्रों में अहम रोल अदा कर रहे हैं। पर्यावरण सुरक्षा और मौसम में बदलाव जैसे कार्यों की परख में भी इनकी महत्पूर्ण भूमिका है।

भूगोल तथा भूगोल से संबंधित स्पेशलाइजेशन कोर्स कराने वाले देश के प्रमुख संस्थान हैं-

- मध्यप्रदेश के कई विश्वविद्यालय।
- किरोड़ीमल कॉलेज, उत्तरी परिसर, दिल्ली।
- दयाल सिंह कॉलेज, लोदी रोड़, नई दिल्ली।
- जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, इलाहाबाद।
- बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
- नेशनल रिमोट सेंसिंग इंस्टीट्यूट, देहरादून।

● इन्दौर

(लेखक देश के ख्यात चिंतक, विचारक और व्यक्तित्व विकास विशेषज्ञ है।)

बाल प्रस्तुति : नारायण व्यास

सकारात्मकता

एक लड़का पढ़ने में बहुत कमजोर था। उसे लगने लगा था कि वह परीक्षा में कभी सफल नहीं हो सकता। जिसके कारण वह परीक्षा में कभी भी सफल नहीं हो सका। परीक्षा में अंक कम आने से उसे पीटा जाता, डांटा जाता। वह खेलने निकलता, परन्तु उसके साथ खेलने के लिए कोई नहीं मिलता। सारे बच्चे विद्यालय जाते थे। तभी उसने एक चिड़िया को देखा जो कि अपने बच्चों के लिए तिनकों का घोंसला बनाने के लिए एक–एक कर तिनके ले जाकर घोंसला बना रही थी और आगे चलने के बाद उसने एक चींटी को देखा जो कि अनाज लेकर दीवार पर चढ़ने पर वह बार–बार गिरती जाती ऐसा लगातार होता। अंततः वह दीवार पर चढ़ गई क्योंकि उसके मन में ऐसा विश्वास था कि वह दीवार पर चढ़ जाएगी। यह देखकर लड़के ने सोचा कि वह भी मेहनत कर सफल हो सकता है। वह यह सोचकर नियमित विद्यालय जाने लगा। मन लगा कर पढ़ाई करने लगा और अंत में परीक्षा में सफल हुआ। उसे पूरी कक्षा में सबसे अधिक अंक मिले थे।

• खाजूवाला(राज.)

ढूंढो हल मिलेगा फल

बाल प्रस्तुति : समीक्षा गुप्ता

- राम-सीता फल खा रहे थे।
- बेटा ! जा मुनक्का ले आ।
- महारानी बूटी पिएंगी।
- कौआ मरते-मरते बचा।
- सच को तराजू में क्या तौलोगे।
- काम के लायक बनिए।
- चौबे रजनी गंधा ले आए।
- कमली चीनी ज्यादा मत खा।
- आप पीताम्बर को जानते हैं?
- हमने लीची कूद-कूद कर खाई।

कविता बनाइए की चयनित रचनाएं

फरवरी २०१६

आया है ऋतुराज बसंत
हुआ सर्द मौसम का अंत
डाल डाल खिल रहे कुसुम
चिड़िया खुश हो चहके झुम

- अनन्त आनंद, भागलपुर (बिहार)

मार्च २०१६

मातृभूमि पर तन मन वारुँ
भारत माँ का रूप संवारुँ
बनूं शिवा सा राष्ट्र धर्म हित
गिन गिन कर बैरी को मारुँ

- नमन श्रीवास्तव, सिंहपुर (म.प्र.)

प्रतिभा परिचय : हार्दिक दवे

नन्हा ध्यानचन्द

आज क्रिकेट, बेडमिंटन और टेनिस जैसे ग्लेमरस और दौलत, शोहरत से ओतप्रोत खेलों के बीच हमारा राष्ट्रीय खेल हॉकी कुछ पीछे छूट गया है, आज हम आपको मात्र साढे पांच वर्ष के नन्हे बालक राजवीर सारवान से मिलवा रहे हैं जो राष्ट्रीय खेल हॉकी की अति जटिल ड्रिबल्स एवं स्कील्स को अत्यंत सरल व सहजता से करता है। इस छोटी उम्र में वह ड्रिबल, जिक, जेल रोक, हिट, रिवर्स स्कुप, बेक, हेण्डर व स्लेब शॉट इत्यादि पूर्ण निपुणता से करता है। हॉकी एक तकनीकी खेल है। राजवीर की चाह ने इस तकनीक को इस छोटी उम्र से ही आत्मसात कर लिया है या ये कहें कि वह जन्मजात खिलाड़ी है। वह ढाई से तीन वर्ष की उम्र से हॉकी खेल रहा है इसका कारण उसका परिवार है जो हॉकी को समर्पित है।

राजवीर को हॉकी विरासत में मिली है। बड़े भाई पार्थ सारवान (१६ वर्षीय) जो कि हॉकी में चार बार इन्दौर संभाग एवं एक बार मध्यप्रदेश स्कूल्स का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। बड़ी बहन १५ वर्षीय तेजस्विनी सारवान भी दो बार इन्दौर संभाग का प्रतिनिधित्व कर चुकी है। १२ वर्षीय बहन संस्कृति सारवान जो कि इन्दौर संभाग से चयनित एकमात्र खिलाड़ी है जो म.प्र. खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा संचालित राज्य महिला अकादमी ग्वालियर में विशेष गहन प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है। संस्कृति ने तीन बार राष्ट्रीय हॉकी प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व किया है। राजवीर के पर दादा श्री एम.एल. सारवान जी भी अच्छे हॉकी खिलाड़ी रहे हैं। पार्थ, तेजस्विनी और संस्कृति तीनों ने प्रकाश क्लब से हॉकी की शुरुआत की है। इन सभी बच्चों के कोच श्री अशोक यादव जी (एचआयएस कोच) हैं जो इन्हें प्रारंभ से मार्गदर्शन व प्रशिक्षण दे रहे हैं। अपने बड़े भाई व बहनों से प्रोत्साहित होकर राजवीर भी हॉकी खेल रहा है और भविष्य में अच्छा हॉकी खिलाड़ी बनना चाहता है उसकी लगन व मेहनत हॉकी मे उसके आगे बढने का मार्ग प्रशस्त करती है। जिस उम्र में बच्चे वीडियोगेम व कार्टून में व्यस्त रहते हैं, राजवीर प्रतिदिन होलकर कॉलेज ग्राउण्ड में अपने पिता एवं भाई के साथ कठोर परिश्रम करता है। उसकी लगन, परिश्रम और समर्पण के कारण वह कॉलेज परिसर में सभी की आँखों का तारा है। छोटी सी उम्र में उसके प्रशंसकों की सूची काफी लम्बी है। जिससे उसे अत्यधिक खुशी एवं प्रोत्साहन मिलता है।

राजवीर तो हमारे आसपास और भी होंगे आवश्यकता है उन्हें पहचानने और बढ़ावा देने की।

● इन्दौर (म.प्र.)

नाम –	राजवीर सारवान
जन्म दिनांक –	१ जुलाई २०१०
कक्षा –	के.जी. सेकेण्ड
रूचि –	हॉकी खेलना
पसंदीदा खिलाड़ी	एरले जेक्सन, रूपिंदर पालसिंह युवराज वाल्मीकि
पता –	होलकर कॉलेज परिसर, इन्दौर

आद्यशंकराचार्य जयंती : ११ मई

बालरूप शंकर

कहानी : डॉ. सत्यकाम पहारिया

पन्द्रह वर्षीय शंकर के उपनयन संस्कार का कार्यक्रम चल रहा था। गुरु जी आसन पर विराजमान थे। बालक शंकर दीक्षित हो चुके थे। गुरु मंत्र वह ले चुके थे। पूजन की सम्पूर्ण क्रिया पूरी हो चुकी थी। उपनयन संस्कार का एक विशेष विधान है–ब्रह्मचारी वेषधारी बटुक समाज से भिक्षाटन के लिए निकलता है और जो प्राप्ति होती है उसे गुरु को समर्पित करता है। उपनयन संस्कार को पूर्णता की ओर ले जाने वाला बटुक सामान्य बालक न था। वह उस अवस्था में वेद–वेदांग में निष्णात था और समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन का पोषक था। परम्परा थी कि भिक्षावृत्ति के लिए निकला हुआ बालक शंकर सर्वप्रथम अपनी माता के पास जाकर झोली फैलाते हुए कहता – ''भवती भिक्षां देहि।'' परन्तु बटुक शंकर तो समाज की परम्पराओं को तोड़ने का उपक्रम करना चाहता था। उसके मन में था कि सड़ी–गली परम्पराओं को तोड़कर समानता एवं समरसता के विचारों का पोषण किया गया। इसीलिए शंकर ने भिक्षाटन के लिए समीप खड़ी हुई एक सामान्य सफाईकर्मी महिला के पास जाकर झोली फैला दी और उच्च स्वर में कहा– ''भवती भिक्षां देहि।'' भिक्षा ली और प्रचलित परम्पराओं तथा निरर्थक मान्यताओं को तोड़ दिया।

यह घटना सामान्य नहीं थी। पर अपने बुद्धि विवेक और दृढ़ संकल्प से बालक शंकराचार्य ने बाल्यावस्था से युग परिवर्तन के अपने क्रांतिकारी विचारों और कार्यों से रूढ़ियों और परम्पराओं को तोड़ा समरसता को पोषित किया। यद्यपि आद्य शंकराचार्य का जीवनकाल मात्र बत्तीस वर्ष ही रहा पर इतनी अल्पआयु में उन्होंने देश को एक सूत्र में बाँधने का सफल प्रयास किया। शंकराचार्य भारतीय दर्शन में वेदान्त के पक्षधर थे। उस युग में विभिन्न मत–मतान्तरों और सम्प्रदायों में जनता फंसी हुई थी। उन्होंने अपने देश की चारों दिशाओं में चार धामों की स्थापना की। उन्होंने ''अहं ब्रह्मास्मि'' का उद्घोष किया। लगभग २०० ग्रंथों की रचना ३२ वर्षों की अल्पायु में बहुत कम समय में की। आद्य शंकराचार्य ने साधुओं को देश और समाज से जोड़ने तथा धर्म को पुष्ट और व्यापक बनाने का अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किया। वे एक महान क्रांतिकारी समाज सुधारक रहे हैं। आद्य शंकराचार्य के उदारवादी दृष्टिकोण तथा समाज के उन्नयन के विचार आज भी प्रासंगिक हैं और अनुकरणीय हैं।

● कानपुर (उ.प्र.)

पुस्तक परिचय

लक्ष्मी खन्ना 'सुमन' द्वारा लिखित
तूलिका प्रकाशन १६, साहित्य विहार, बिजनौर द्वारा प्रकाशित
बाल साहित्य की अनमोल कृतिया

गधा बत्तीसी

इस रोचक मनोरंजन से भरपूर बाल उपन्यास का केन्द्रीय पात्र है एक गधा। एक हास्य पूर्ण घटनाओं से गुदगुदाती रचना।

पृष्ठ : ८८ • मूल्य २०० रु.

ईनी-मिनी की मजेदार दुनिया

दो मधुमक्खियों की रोचक कथा से बुना बाल उपन्यास सचित्र प्रस्तुति से बच्चों के लिए रची एक रोचक कृति।

पृष्ठ : ८० • मूल्य २०० रु.

छुटके मुटके जंगल में

बच्चो! छुटके भाई का जंगल की यात्रा के रोचक अनुभव आपदाओं से जूझने की रोमांचक गाथा इस बाल उपन्यास को जिज्ञासा एवं रुचि से भर देती है।

पृष्ठ : ११० • मूल्य २०० रु.

नन्हे मुन्ने गीत

विविधतापूर्ण रोचक विषयों पर ४४ मन भावन बाल गीतों की सचित्र प्रस्तुति

पृष्ठ : ८० • मूल्य २०० रु.

अजूबे

अपनी लोकप्रियता के कारण अंग्रेजी और पंजाबी में भी प्रकाशित श्री लक्ष्मी खन्ना 'सुमन' का प्रथम बाल उपन्यास।

पृष्ठ : १३४ • मूल्य ४० रु.

प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इण्डिया,
नेहरू भवन, ५, इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज।।, बसंतकुज, नई दिल्ली ७०

चिड़ियों की दुनिया रंगीन

पक्षियों के साथ सरल विनोद के माध्यम से तर्क सम्मत रुचिर कथानक से किशोरों के लिए रचा बाल उपन्यास।

पृष्ठ : ९६ • मूल्य २०० रु.

प्रकाशक - गीतिका प्रकाशन
साहित्य विहार, बिजनौर (म.प्र.)

सुनो पहेली नई पहेली

३०० काव्यबद्ध रोचक मनोरंजक एवं विस्मित कर देनी वाली पहेलियाँ

पृष्ठ : ८८ • मूल्य २०० रु.

प्रकाशक - बुक क्राफ्ट पब्लिशर्स
डब्ल्यू-११२, ग्रेटर कैलाश-१, नई दिल्ली ११००४८

चिड़िया घर की सैर कराएं

सम्पूर्ण बहुरंगी सचित्र बाल कविताएं।

पृष्ठ : ३० • मूल्य २४ रु.

प्रकाशक -राष्ट्रीय पुस्तक न्यास
नेहरू भवन, ५, इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज।।,
बसंतकुज, नई दिल्ली ७०

जादुई गुब्बारे - डॉ. मंजरी शुक्ला की ३० उत्सुकता भरी मनोरंजक बाल कहानियाँ। बाल मन की सूक्ष्म अभिव्यक्ति से रंजित रोचक प्रस्तुति। • मूल्य ५० रु.

प्रकाशक– बुद्धा प्रकाशन, बुद्धा रेजीडेंसी २१, विधानसभा मार्ग, लखनऊ २२६००१ (उ.प्र.)

श्रीमती सुधा गुप्ता की तीन बाल कृतियाँ

पम्मी शम्मी - पर्यावरण, स्वास्थ्य, जीवदया, मैत्री एवं साहस जैसे जीवन मूल्यों से भरी पांच मनोरंजक बाल कहानियाँ। • मूल्य ३५ रु.

प्रकाशक– विभोर प्रकाशन एवं प्रकाशन २४२, सर्वधर्म कालोनी, सी–सेक्टर, कोलार रोड़, भोपाल ४२ (म.प्र.)

चुलबुली - पशुपक्षियों को पात्र बनाकर लिखी पांच रोचक बाल कहानियाँ।

• मूल्य ४० रु.

प्रकाशक– बाल कल्याण एवं बाल साहित्य शोध केन्द्र, भोपाल (म.प्र.)

जंगल की एकता - पंचतंत्र की परम्परा को आगे बढ़ाती पशु पक्षियों के मुँह से मानवीय मूल्यों को कहती पांच कहानियाँ। • मूल्य ३५ रु.

प्रकाशक– बुद्धा प्रकाशन, बुद्धा रेजीडेंसी २१, विधानसभा मार्ग, लखनऊ २२६००१ (उ.प्र.)

डॉ. रोहिताश्व अस्थाना की अनिमेष पब्लिकेशन ५/२, गली नं. ५ आर ब्लॉक, राजा गार्डेन, नियर मास्टर कॉलोनी, गरिया वार्डन, पसौण्डा साहिबाबाद, गजियाबाद ०५ (उ.प्र.) द्वारा प्रकाशित

पशु-पक्षियों की बाल कविताएं- पशु पक्षियों से पहचान कराती मित्रता रचाती ४८ बाल कविताओं का शाब्दिक चिड़ियाघर। • मूल्य ३५० रु.

बचपन की पचपन कविताएं- गेयता, सरसता, सरलता एवं संगीतात्मकता भरी ऋतु, पर्व, पशुपक्षी, पर्यावरण एवं देशभक्ति पूर्ण ५५ कविताएं। • मूल्य ३५० रु.

सब मृग सारे गीत हमारे- डॉ. रोहिताश्व अस्थाना द्वारा संपादित २८ बाल रचनकारों की पशु पक्षियों पर केन्द्रित काव्य रचनाएँ। • मूल्य ५० रु.

प्रकाशक– बाल वाटिका प्रकाशन, नंदभवन, कॉवा रोड़ पार्क, भीलवाड़ा ३११००१ (राज.)

ऐसा बोले बरसें फूल - सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार राजा चौरसिया रचित ३१ सुमधुर मनोरंजन, शिक्षा एवं संस्कारों से भरे बालगीत जिनमें बाल मन की भावनाएं मुखरित है।

• मूल्य १०० रु.

प्रकाशक– कादम्बरी प्रकाशन जबलपुर

सम्पर्क – राजा चौरसिया, उमरियापान, कटनी (म.प्र.)

लोक कथाः शशि गोयल

मगर को जीभ क्यों नहीं ?

जब कौए ने मोटे मगर को देखा तो उसके मुँह में पानी आ गया। उसने तरकीब से मगर को खत्म करने की सोची। वह उससे बोला, ''मित्र! अगर तुम्हें घर में रहते बहुत दिन हो गए हैं, तुम यहाँ रहते रहते अवश्य ऊब गए होंगे। तुम इस छोटी सी छिछली नदी में रहते हो जब कि यहाँ से कुछ दूर पर ही एक बहुत बड़ी नदी है।''

'मैंने इसके बारे में कुछ भी सुना नहीं है।' मगर ने कहा– ''मैं कभी झूठ नहीं बोलता!' कौए ने कहा–''मैं बहुत दयालु हृदय का हूँ, और दुखियों की सहायता करना हमें अच्छा लगता है।'' मगर उसकी चापलूसी की बातों में आ गया और बोला, क्या तुम मुझे उस बड़ी नदी तक ले चलोगे?''

''हाँ हाँ ले चलूँगा!''कौए ने राजी होते हुए कहा, ''तुम्हारा जैसा मजबूत और स्वस्थ वहाँ तक आराम से पहुँच जाएगा। बस नदी आधा मील दूर है।'' मगर राजी हो गया अब आगे कौआ पीछे पीछे मगर नदी की ओर चल दिए। जब एक मील के करीब आ गया तो मगर बोला– ''हम अवश्य ही करीब एक मील तक चल चुके हैं लेकिन नदी अभी तक नहीं आई।''

''चले आओ''– कौऐ ने जवाब दिया, ''हम अभी कुछ गज ही चले हैं, तुम अभी से थकान महसूस करने लगे।''

मगर को यह कहने में शरम महसूस हो रही थी कि वह थक गया है इसलिए वह चल दिया। अंत में वह इतना असहाय हो गया कि सड़क के किनारे पर पड़ गया। तब वे करीब तीन मील चल चुके थे। कौआ हँसा और बोला– ''बहुत अच्छे मित्र तुम शीघ्र ही भूख और प्यास से मर जाओगे चिंता नहीं करना जब तुम मर जाओंगे तब मैं आकर तुम्हें खौलूँगा। यह कहकर कौआ उड़ गया।

एक दयालु गाड़ीवान उधर से गुजर रहा था उसने मगर को सड़क पर पड़े हुए देखा। मगर ने आंसू भरकर अपनी जान की भीख मांगी उसने कहा वह उसे दुबारा नदी में डाल आए। गाड़ीवान को मगर की दशा पर दुःख हुआ। उसने उसे रस्सी से पहले अच्छी तरह से बांध दिया और अपनी गाड़ी पर चढ़ाया। गाड़ीवान गाड़ी को नदी के किनारे तक लाया और मगर को वहीं डालने लगा। मित्रों मगर ने काँपती आवाज में प्रार्थना की– ''मैं

बहुत कमजोर हो गया हूँ और मेरे कंधे रस्सी बंधने से जकड़ गए हैं। अगर तुम किनारे पर डाल जाओगे तो मैं बहुत देर तक तो तैरने के काबिल नहीं रहूँगा। मुझे पड़ा देखकर आदमी मुझे मार डालेंगे इसलिए कृपा करके अपनी गाड़ी को नदी के किनारे से थोड़ा पानी के अंदर ले चलो जब तुम्हारे बैलों के कुल्हे तक पानी आ जाए तब मुझे डाल देना।''

गाड़ीवान ने वैसा ही किया, जैसे ही उसने मगर के बंधन खोल कर नदी में डाला बदमाश मगर ने एक बैल का पैर पकड़ लिया। मुझे जाने दो, मैंने तुम्हें बचाया और तुमने ही मेरे बैल का पैर पकड़ लिया, उसे छोड़ दो'' पर मगर ने पैर नहीं छोड़ा। पास में एक खरगोश पानी पी रहा था। वह तमाशा देख रहा था वह चिल्लाया उसे चाबुक मारो गाड़ीवान ने कस कसकर उसे चाबुक मारे कि उसे बैल का पैर छोड़ना ही पड़ा। गाड़ीवान ने तेजी से गाड़ी किनारे की ओर हांक दी और खरगोश को उसकी सलाह के लिए धन्यवाद दिया।

मगर तब ही से खरगोश का दुश्मन हो गया और उसने कसम खाई कि वह बीच में पड़ने वाले खरगोश को भी पानी पीने आएगा अवश्य पकड़ लूंगा। परन्तु किनारे नदी का जल इतना छिछला था कि वह अपनी पीठ को पूरी तरह नहीं छिपा पाता था। वह कोशिश करता था लेकिन उसकी पीठ का उभरा भाग ऊपर दिखता। जब उसने खरगोश को देखा तो वह बिलकुल निश्चल लट्ठे की तरह पड़ गया। लेकिन खरगोश बुद्धिमान था उसने ध्यान से लट्ठे की ओर देखा और गाया–

मगर है सच्चा पानी ऊपर तैरता,
लट्ठा है सच्चा पानी नीचे तैरता

मगर खरगोश को यह विश्वास दिलाने के लिए कि वह लट्ठा ही है कुछ दूर तक तैरता गया। खरगोश ने मौका देखा, जल्दी से पानी पिया और हट गया। दूसरे दिन मगर ने फिर लट्ठा बनकर इंतजार किया। खरगोश ने पहले की तरह गाया–

मगर है सच्चा पानी ऊपर तैरता,
लट्ठा है सच्चा पानी नीचे तैरता।

परन्तु मगर इस बार बिलकुल निश्चल रहा और खरगोश ने यह सोचकर कि यह वास्तव में लठ्ठा है अपना मुँह पानी में झुकाया कि मगर ने पकड़ लिया और उसे लेकर गहरे पानी की तरफ जाने लगा उसके मन में यह भी था कि वह सभी पानी के जीवों को दिखा दे कि उसने चालक खरगोश को पकड़ लिया है। वह खुशी से अपनी पूंछ फटकार रहा था और मुँह से ही ही ही की आवाज निकाल रहा था खरगोश ने मगर के मुँह में उसकी जीभ कसकर पकड़ रखी थी। उसे पकड़े ही कहा– ''तुम खाली ही ही कर सकते हो या हा हा हा भी कर सकते हो।''

जवाब में मगर हा हा करके हंसा। जब उसने हा हा की तो उसे अपना मुंह फैलाना पड़ा और यही खरगोश के लिए मौका था। वह उसकी कटी जीभ लेकर कूद गया। यही कारण है मगर के मुँह में जीभ नहीं है।

● आगरा (उ.प्र.)

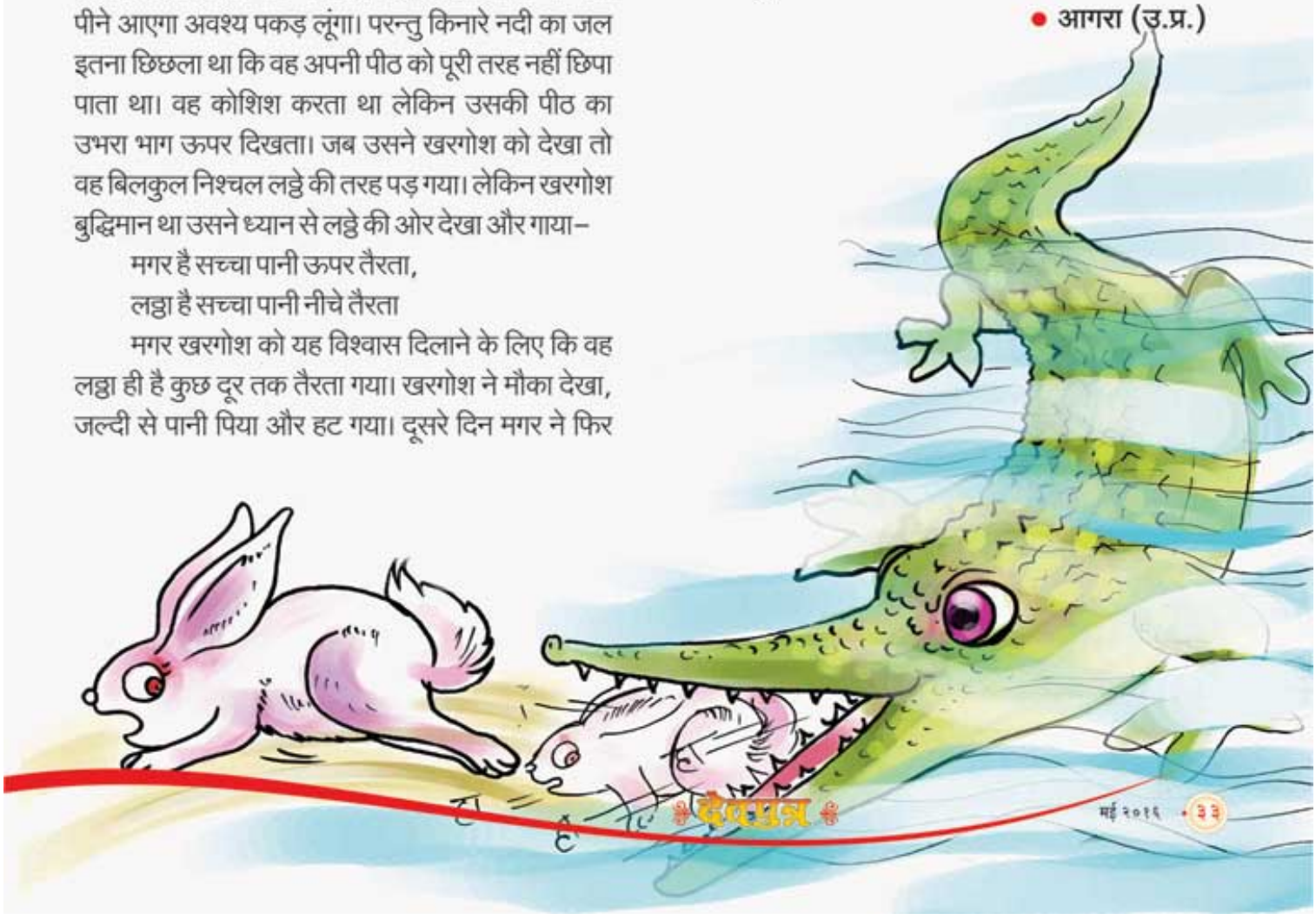

गर्मी से अड़ा तरबूज
छोटा बड़ा तू बूझ

बच्चो! गर्मी का मौसम हो और सामने रसभरा लाल लाल तरबूज तो क्या कहने? पर रुकिए जरा पता तो लगाएं कौनसा तरबूज किससे बड़ा।

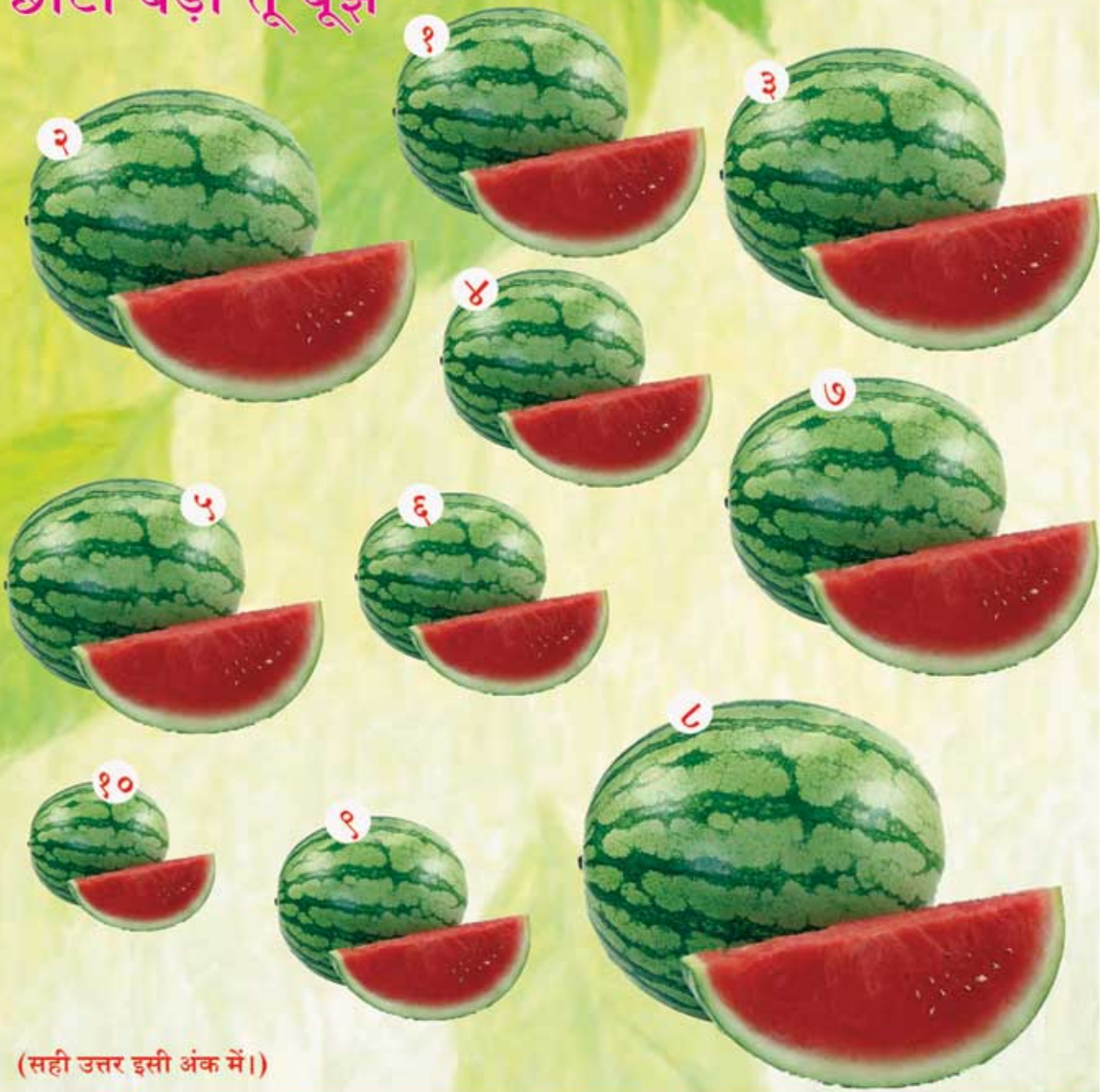

(सही उत्तर इसी अंक में।)

सही उत्तर

ढूंढो हल मिलेगा फल

क्रमशः - सीताफल, जामुन, नीबू, आम, चकोतरा, केला, बेर, लीची, पपीता, चीकू।

कितनी अच्छी गर्मी दीदी

कविता : योगेन्द्रसिंह भाटी 'योगी'

कितनी अच्छी गर्मी दीदी
जड़ता दूर भगाती है,
बहा बहा कर खूब पसीना,
नई ताजगी लाती है।
कम खाओ तुम, गम खाओ तुम।
गर्मी हमें सिखाती हैं,
तपा तपा कर बार-बार यह
कुंदन हमें बनाती है
गुजर गरीबी में करने का
गुर यह हमें बताती है
कष्ट सहन करने की क्षमता
हममें यह पनपाती है।

• निम्बाहेडा (राज.)

षट्भुजा

देवांशु वत्स

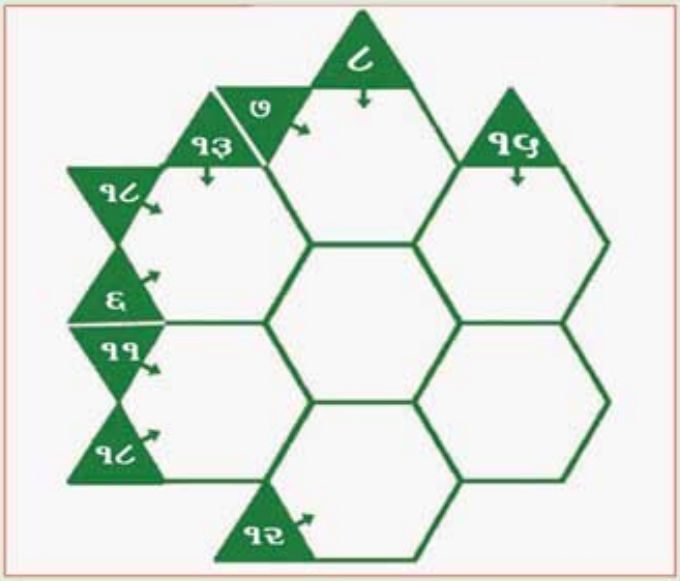

खेलने के नियम

सफेद बक्से में १ से ९ तक के अंकों को इस तरह से लिखें कि तीर की सीध में आने वाले बक्सों के अंकों का योग उसी तीर वाले त्रिभुज में लिखे अंक जितना हो।

(उत्तर इसी अंक में)

शब्दक्रीडा(१७)

दशावतार

बच्चो! पुराणों में भगवान विष्णु के दस प्रमुख अवतार माने गए हैं। यह अवतार मानव समाज में अच्छाइयों को बढ़ावा देने और बुराईयों का अन्त करने के लिए हुए हैं। ऐसी मान्यता है कि १० में से ४ अवतारों की जयंती तिथि इस वैशाख मास में ही है। आपको ढूंढना है इन दस अवतारों के नाम। दस नाम ढूंढने वाला उत्तम, आठ ढूंढने वाला मध्यम व पांच नाम ढूंढने वाला सामान्य बुद्धि कहलाएगा। (सही उत्तर इसी अंक में)

नृ	रा	न	वा	ल्कि	शु	कू	प
म	सिं	म	द्ध	रा	म	ष्ण	र्म
प	ल्कि	ह	न	त्स्य	रा	सिं	द्ध
बु	रा	नृ	र	कृ	शु	कू	म
वा	नृ	क	ल्कि	कू	र	बु	क
म	म	स	र्म	सिं	प	ह	त्स्य
शु	ल्कि	न	नृ	द्ध	ह	कृ	न
म	कृ	र	बु	म	सिं	वा	ष्ण

यह भी कीजिए -

(१) दसों अवतारों की क्रमवारसूची बनाना।

(२) इस सूची को चारो युग में बांटना।

(३) इनमें से पूर्ण मानव रूपीअवतारों के माता पिता का नाम जानना।

(४) इस माह (वैशाख) में जिनकी जयंती है कौन से है वे चार अवतार?

सही उत्तर

गर्मी से अड़ा तरबूज छोटा बड़ा तू बूझ

१०,६,९,४,५,१,७,३,२,८

पहेलियाँ - (१) जूते (२) मूँछे (३) जंजीर

चूं चूं की जोड़ी - ५ व ७

सही उत्तर

जानो पहचानो

स्वामी रामानुजाचार्य
जयंती १२ मई

दांतों का इलाज

चित्रकथा - देवांशु वत्स

सूरज दादा

दो कविताएँ : राकेश चक्र

सूरज दादा रोज सुबह को
नई रोशनी लाते।
नारंगी-सा रूप दिखाकर
सबके मन को भाते।
अंधियारे को डाँट-डपटकर
हर दिन दूर भगाते।
इसीलिए यह सूरज दादा
दिनकर भी कहलाते।

रोज सुबह जग जाएँ हम

रोज सुबह जग जाएँ हम
दीदी जी कहती हैं मेरी-
रोज सुबह जग जाएँ हम।
शौच जाएँ पानी नित पीकर
तन के रोग मिटाएँ हम।
मंजन कर सोने से पहले
दाँत सदा चमकाएँ हम।
माँजी, सब्जी दाल खिलाएँ
खूब प्रेम से खाएँ हम।
कपड़े धुले हुए नित पहनें
मल-मल रोज नहाएँ हम।

● मुरादाबाद (उ.प्र.)

सही उत्तर

षट्भुजा

पहुँचाओ जो जानें

राजेश गुजर

बच्चों, चिंकी-मिंकी मधुमक्खियों को शहद बनाने के लिए पेड़ पर बने छत्ते तकपहुँचाओ।

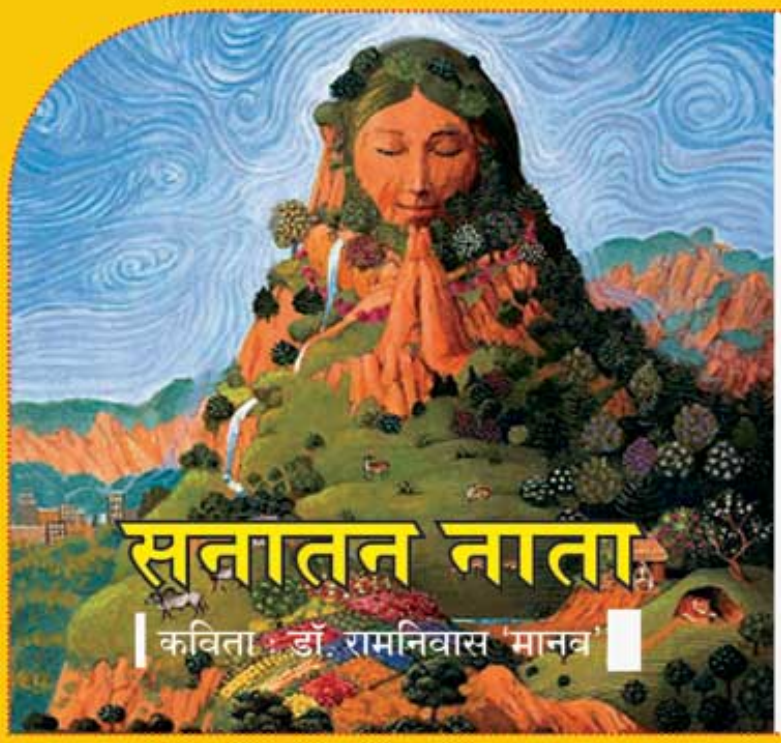

सनातन नाता

कविता : डॉ. रामनिवास 'मानव'

धरती माँ, आकाश पिता है,
और पेड़ हैं भ्राता।
यही हमारा है इन सबसे
सुखद सनातन नाता।
नदियां, निर्झर, पर्वत, सागर,
सारे अपने सहचर।
पुष्प, लता, पक्षी, भंवरों से
जीवन लगता सुंदर।
इन सबको जानें-पहचानें,
रिश्ते सभी निभाएं।
तालमेल से जीवन संवरे,
सुख देकर सुख पाएं।

• हिसार (हरियाणा)

नन्ही

लघु कथा : डॉ. मंजरी शुक्ला

छोटी मकड़ी नन्हीं माँ के साथ दीवार पर बढ़ी जा रही थी। चढ़ते-चढ़ते नन्हीं थक गई। वह माँ से बोली-''अब माँ, तुम यही पर जाला बना लो ना...मुझसे और चढ़ा नहीं जा रहा है। देखो मेरे नन्हे नन्हे पैर थक कितना गए हैं।'' ये सुनकर माँ उसके भोलेपन पर हंस पड़ी और वहीं पर जाला बनाने लगी। तभी उसी घर में रहने वाला बच्चा मुन्नू अपने छोटे भाई के साथ खेलते हुए आया।

अचानक मुन्नू की नजर दीवार की ओर पड़ी और वह चीखा-''अरे, कल सारी रात माँ ने इतनी मेहनत से घर साफ किया था ताकि आज मेरे जन्मदिन पर मेरे दोस्त मेरा साफ सुथरा घर देखकर खुश हो जाए और यह मकड़ी....''

छोटा भाई भला कैसे पीछे रहता। वह भी मुन्नू की हाँ में हाँ मिलाते हुए, अपने नन्हें हाथ नाचते हुए बोला-''और क्या? जरा देखो तो, यहां इत्ता बड़ा जाला बन जाएगा तो कितना खराब लगेगा। चलो भैया हम मकड़ियों को भगाकर इस जाले को हटा देते हैं।''

मुन्नू बोला-''नहीं, नहीं रहने दो, मैं नहीं चाहता कि मेरे जन्मदिन पर मैं उस नन्ही मकड़ी को तंग करुं जो अपनी माँ के साथ बैठी है।''

अपने लिए इतने प्यार भरे शब्द सुनकर नन्ही के खुशी के मारे आँसू आ गए।

वह माँ से बोली-''माँ, मेरे पैर थके नहीं है। हम अपना जाला घर के बाहर बनाएंगे।''

माँ ने मुस्कुराकर उसे प्यार भरी नजरों से देखा और उसे लेकर खिड़की से निकल गई। मुन्नू खुशी से ताली बजा रहा था कि अब वो उस जगह पर ढेर सारे गुब्बारे लगा सकेगा।

नन्हीं मकड़ी धीरे से बोली-''जन्मदिन की ढेरों शुभकामनाएँ मुन्नू.....।

● इलाहाबाद (उ.प्र.)

उलझन सुलझाओ

राजेश गुजर

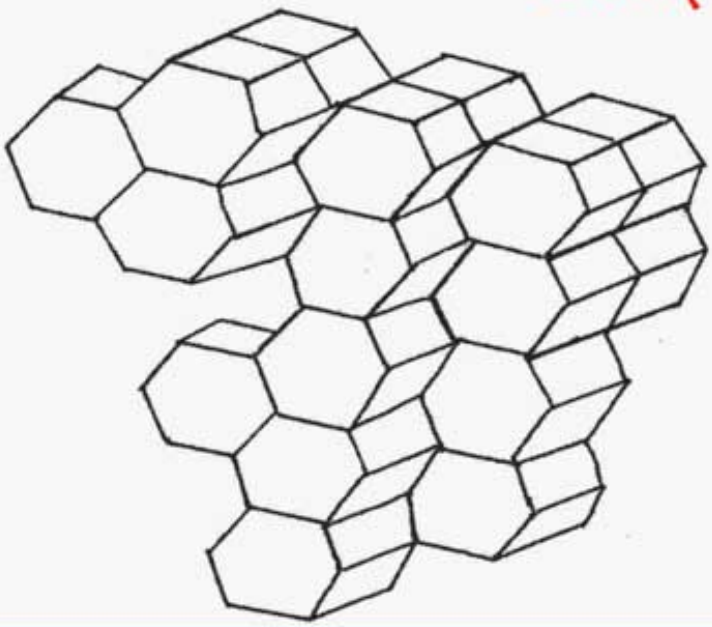

यहाँ कुल षट्कोण डिब्बे कितने हैं गिनकर बताओ?

(उत्तर इसी अंक में।)

२. यहाँ चौरस डिब्बे कितने हैं गिनकर बताओ?

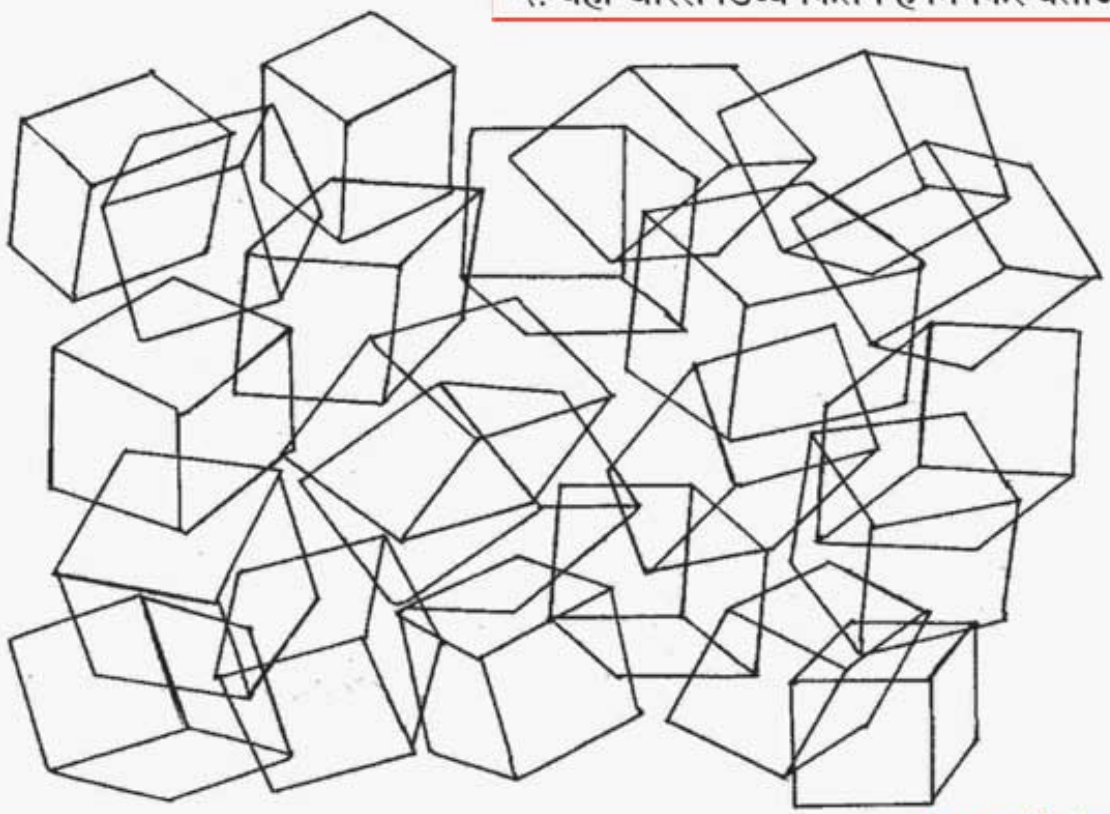

(उत्तर इसी अंक में।)

मिट्ठू

कहानी :डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव

अपनी सहेली सोनम के घर एक प्यारा सा तोता देखकर समृद्धि अपनी माँ से बोली–''माँ, माँ मुझे भी एक तोता ला दीजिए। मेरी हर सहेली के घर कोई न कोई पालतू पक्षी या कोई पालतू जानवर है। बस मेरे घर कुछ नहीं हैं।''

''हाँ, हाँ समृद्धि, यदि तू कहती है तो मैं तेरे लिए भी एक तोता जरूर ला दूंगी। पर एक बात है वह तुझे ध्यान रखनी होगी।'' माँ ने कहा।

''कौन सी बात माँ! मैं सब ध्यान रखूँगी।'' समृद्धि ने बड़ी तेजी से अपने मन की बात कह डाली। समृद्धि, तुझे अपनी पढ़ाई के साथ–साथ तोते के खाने–पीने का पूरा–पूरा ध्यान रखना पड़ेगा।''–माँ ने कहा। ''हाँ, हाँ माँ मेरी सहेली सोनम भी अपने तोते का खूब ध्यान रखती है। वैसे ही मैं भी उसका हर तरह से ध्यान रखूँगी। आप जरा भी चिंता न करें।''–समृद्धि ने बड़ी जोरदारी से कहा।

दूसरे ही दिन रविवार था। रविवार को हाट बाजार लगता था। समृद्धि की माँ एक पिंजरे से उसके लिए तोता खरीद लाई। तोते को देखकर समृद्धि एकदम से चहक उठी। वाह माँ, मेरी प्यारी माँ आपने तो कमाल ही कर दिया। मेरे लिए इतना जल्दी तोता ला दिया। धन्यवाद माँ!''

माँ बोली–''बिटिया, अब तोता तो मैंने ला दिया अब इसका ध्यान रखना तुम्हारी जिम्मेदारी है। नहीं तो यह बेचारा दुखी हो जाएगा।''– नहीं माँ मैं इसको जरा भी दुखी नहीं होने दूँगी। इसका खूब ध्यान रखूँगी।''

समृद्धि उसी दिन से अपने प्यारे मिट्ठू का ध्यान रखने लगी। उसने तोते का नाम मिट्ठू रखा दिया। वह उसे समय पर खाना देती। उसके पिंजरे की साफ–सफाई भी करती।

एक दिन जब समृद्धि विद्यालय से घर लौटी तो उसने देखा कि उसके मिट्ठू के पिंजरे के पास ढेर-सारे तोते आकर अपनी बोली में बाते कर रहे थे। बीच-बीच में समृद्धि का तोता भी टें-टें करने लगता।

समृद्धि ने तुरंत माँ को बुलाया और कहा- माँ! माँ! उधर पिजरे की तरफ तो देखो। मिट्ठू के मित्र उससे मिलने के लिए आए हैं।'' माँ ने आते ही कहा-'' देख समृद्धि! ये सब तेरे तोते के मित्र हैं जो इससे मिलने आए हैं। इन सब को पता लग गया कि यह उनका साथी हमारे घर पर है। इन्हें देखकर तो ऐसा लग रहा है कि जैसे इनको बड़ा दुःख है कि उनका मित्र पिंजरे में बंद हो गया है।''

समृद्धि ने कुछ सोचते हुए कहा-'' सच! माँ ये मिट्ठू के मित्र है।'' ''हाँ बिटिया रानी, तू भी तो अपनी सहेलियों के पास जाती है। उनके साथ तरह-तरह के खेल भी खेलती है। तुझे सहेलियों के साथ खेलते हुए अच्छा लगता है न!

''हाँ माँ! पर हमारा मिट्ठू तो पिंजरे में बंद है। वह अपने मित्रों के साथ खेलने भी नहीं जा पाता है।'' बस समृद्धि यही तो बात है। तभी तो तेरे मिट्ठू को तकलीफ होती है। इसीलिए वह किसी-किसी दिन ढंग से खाना भी नहीं खाता।'' माँ ने कहा।

''सच माँ! मैं अपने मिट्ठू को अब दुखी और कष्ट में नहीं देख सकती। मैं तो चाहती हूँ कि यह भी मेरी तरह अपने मित्रों के साथ खूब खेले। मैं इसे छोड़ दूँगी। मैं इसे पिंजरे से बाहर निकाल कर आजाद कर दूँगी। मुझे माफ करना माँ!'' समृद्धि कुछ ज्यादा ही भावुक मन से बोल उठी। तभी उसकी माँ बोली-''समृद्धि जैसी तेरी इच्छा हो वैसा तू करना। मैं और तेरे पिताजी तुझसे कुछ भी नहीं कहेंगे। और हाँ, तुझे माफी मांगने की भी कोई जरूरत नहीं।'' और दूसरे ही दिन समृद्धि ने सबेरे -सबेरे मिट्ठू के पिंजरे का दरवाजा खोल दिया। मिट्ठू धीरे-धीरे पिंजरे से बाहर निकला। तभी अचानक से तीन-चार तोते भी आ गए।

मिट्ठू ने एक पल को समृद्धि की ओर देखा और फिर अपने साथियों के साथ टें-टें-टें करता हुआ आकाश में उड़ गया। ऐसा लग रहा था जैसे तोता मानों अपनी आजादी के लिए समृद्धि को धन्यवाद कह रहा हो।

● ग्वालियर (म.प्र.)

प्रस्तुति : विष्णुप्रसाद चौहान

विनम्रता

सुराही के ऊपर रखी कटोरी ने एक दिन सुराही से पूछा-'आप जो भी बर्तन चाहे छोटा हो या बड़ा, उसे पानी से पूरा भर देती है लेकिन मैं हूं कि सदा आपके सिर पर रहती हूँ लेकिन आप मुझे पूरा भरना तो दूर एक बूंद पानी तक नहीं डालती? यह भेदभाव क्यों? सुराही ने जवाब दिया-ये जो बर्तन है मेरे सामने नीचे नम्रता से झुकते हैं, तभी तो मैं भी नीचे झुककर इनको पानी से भर देती हूं और एक तुम हो जो हमेशा घमंड में चूर मेरे सिर पर बैठी रहती । ''तुम झुकना नहीं चाहती, इसलिए बूंद-बूंद पानी के लिए तरसती रहती हो। अगर तुम भी मेरे सामने नम्रता से झुकना सीख जाओगी। तो मैं भी विनम्र बनकर तुम्हें पानी से भर दूंगी।'' कटोरी को सुराही का मतलब समझ में आ गया और उसके बाद उसने कभी यह प्रश्न सुराही से नहीं किया।

● ढबला हरदू (म.प्र.)

कविता : लक्ष्मीनारायण भाला 'लच्छू भैया'

गोल

वह देखो साईकिल का पहिया
बस और ट्रक का पहिया गोल।
रोज उगे जो सूरज गोल
चाँद और पृथ्वी भी गोल।।
देखो यह चूड़ी है गोल
माथे की बिंदिया भी गोल।।
गोल-गोल भाई गोल-गोल।
आओ देखें क्या है गोल।।
तरबूज गोल, अमरूद गोल
आलू और टमाटर गोल।
रसगुल्ला भी गोल है देखो
रोटी सेकी वह भी गोल।
माँ ने लड्डू दिया हाथ में
खाने से पहले था गोल।।
गोल-गोल भाई गोल-गोल।
आओ देखें क्या है गोल।।
एक रूपय्या देखो गोल
अंकों का राजा भी गोल
जिस संख्या में गोल लगा दें
दस गुन बढ़कर करती मोल।
आओ सब मिल हाथ पकड़ लें
देखो हो गए हम भी गोल
गोल-गोल भाई गोल-गोल।
आओ देखें क्या है गोल।।

• भोपाल (म.प्र.)

समाचार

धरोहर विशेषांक राजगीर में लोकार्पित

राजगीर (बिहार)। देवपुत्र का गौरवशाली धरोहर विशेषांक प्राचीन ऐतिहासिक नगर राजगीर में श्री भागैया जी (सह सरकार्यवाह, रा.स्व.संघ), मा. ब्रह्मदेव जी शर्मा (राष्ट्रीय मार्गदर्शक, विद्याभारती), डॉ. गोविन्द जी शर्मा (राष्ट्रीय अध्यक्ष, विद्याभारती) एवं श्री ललित बिहारी जी गोस्वामी (महामंत्री, विद्याभारती) ने लोकार्पित किया। देश के प्रत्येक प्रांत से पधारे ३०० विद्वानों एवं शिक्षाविदों की उपस्थिति में देवपुत्र के प्रबंध सम्पादक डॉ. विकास दवे ने अंक का लोकार्पण सम्पन्न कराया। वे विद्याभारती की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में विशेष आमंत्रित थे। उपस्थित महानुभावों ने अंक की भूरि भूरि प्रशंसा कर देवपुत्र के इस प्रयास को अत्यंत सार्थक बताया।

ज्ञातव्य है कि देवपुत्र ने इस धरोहर अंक को देशभर के साहित्यकार एवं पाठकों ने सराहा है।

चले ज्ञान की रेल, आओ खेलें खेल

बाल प्रस्तुति : सुरम्या श्रीवास्तव

यहाँ कुछ अधूरे शब्द उनके पर्यायवाची शब्द या अर्थ सहित दिए गए हैं। आपको रिक्त स्थानों में सही अक्षर लिख कर उन शब्दों को पूरा करना है। लेकिन शर्त यह है कि हर शब्द में दोनों खाली चौकोरों में एक ही अक्षर लिखना है।
उदाहरण के लिए क्रमांक १ देखें।

१. शरारती	न	ट	ख	ट	२. एक मिठाई		म		म
३. अनुमानतः	ल		भ		४. समान		रा		र
५. गलती	ग		ब		६. जल्दी से		टा		ट
७. गतिविधियां	ह		च		८. कीचड़		ल		ल
९. शासन	स		का		१०. विष		ला		ल
११. खोया हुआ	गु		ना		१२. क्रम		ल		ला

● शहडोल (म.प्र.)

सही उत्तर

शब्दक्रीडा (दशावतार)

१) मत्स्यय/मीन २) कूर्म/कच्छप ३) वाराह/शूकर ४) नृसिंह ५) वामन ६) परशुराम ७) राम ८)कृष्ण ९)बुद्ध १०)कल्कि

याद रखने के लिए श्लोक

मात्स्यं, कूर्मं च वाराहं, नारसिंहं च वामनम्।
रामं, रामं च कृष्णं च बुद्धं, कल्किं नमाम्यहम्।।

कविता : निर्मला सिंह

सड़क

धूपों-धूपों, छाँवों-छाँवों,
शहरों-शहरों, गाँवों-गाँवों,
गलियाँ-गलियाँ, मोड़-मोड़
यह तो देती सबको जोड़
देखो! सबको गले लगाए
उनको मंजिल तक पहुँचाए।

कहीं साँप जैसी लहराएं,
कहीं तीर सी सीधी जाए,
कहीं धूल-मिट्टी की कच्ची,
कहीं रेत-सीमेंट की पक्की,
इसके तो हैं काम अनेक,
इसके तो है नाम अनेक,

इस पर चलते पशु इंसान,
हो गरीब या हो धनवान,
हर पल इस पर चलते वाहन,
गर्मी, सर्दी या हो सावन,
यह तो कभी नहीं घबराए,
हर पल अपना फर्ज निभाए,

● बरेली (उ.प्र.)

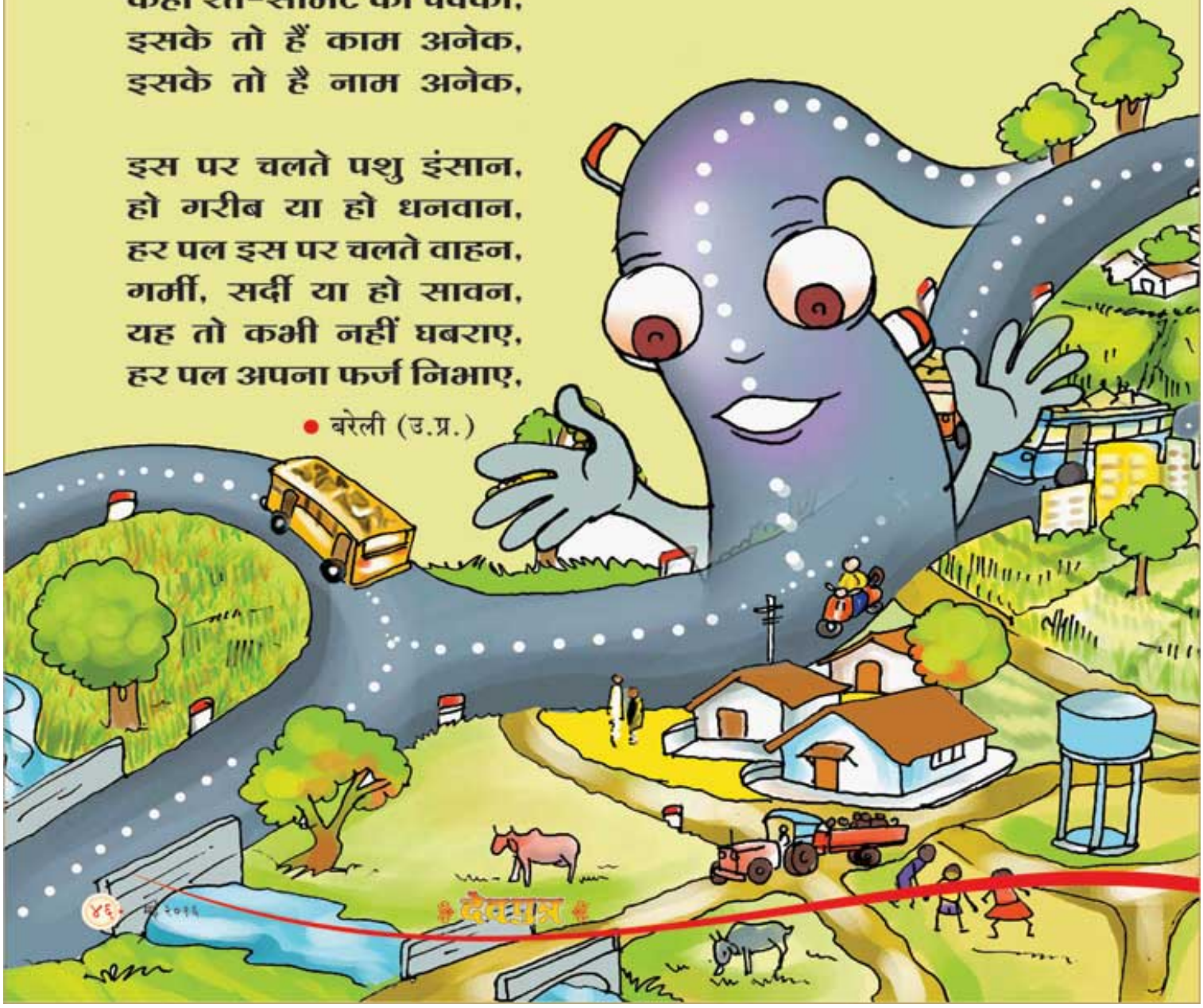

बाल प्रस्तुति : वैष्णवी सिंह

समझदार नौकर

एक समय की बात है एक बहुत अमीर आदमी हुआ करता था। जो बहुत घमंडी था। उसके घर में बहुत सारे नौकर हुआ करते थे। सभी अलग-अलग प्रकार के काम किया करते थे। एक दिन उनके मालिक ने सोचा कि मैं अपने सभी नौकरों की परीक्षा लेता हूं। इस परीक्षा में पता चल जाएगा कि मेरे सभी नौकर में सबसे लालची नौकर कौन है?

उसने अपनी सभी नौकरों से कहा कि- मैं तुम सभी को सौ-सौ रुपए देता हूं और दो-दो रुपए भी। जिनको जो लेना है वो ले सकता है परन्तु शर्त यह है कि मैं सौ रुपए सिर्फ आज ही दूंगा परन्तु दो रुपए रोज दूंगा। उसके सभी नौकर लालची थे, सभी ने सौ रुपए ले लिए। परन्तु एक नौकर ने दो रुपए रोज लेने का फैसला लिया।

कई दिन बित गए मालिक ने उस चतुर नौकर से पूछा कि- सभी नौकरों ने सौ रुपए लेने का फैसला किया। परन्तु तुमने दो रुपए लेने का फैसला क्यों किया? नौकर ने उत्तर दिया-मालिक मुझे पता था कि अगर मैं सौ रुपए ले लेता तो वे फिजुलखर्ची में उड़ जाते मुझे फिर कभी पैसे नहीं मिलते। परन्तु दो रुपए तो मुझे रोज मिलेंगे। उनसे मेरा जरुरी काम चल सकता है। बल्कि उसमें से कुछ बचाने की कोशिश करूँतो बहुत सारे पैसे जमा कर सकता हूं। यह सुनकर मालिक बहुत खुश हुआ और उस नौकर को ढेर सारे पैसे दिए।

● खाचरौद (म.प्र.)

चुटकुले

एक आदमी को लेकर टेक्सीवाला नियत स्थान पर ले गया।

टेक्सीवाला – आपके पूरे सौ रुपए हो गए।

आदमी – यह लो पचास रुपए।

टेक्सीवाला – अरे! आप को सौ रुपए देने हैं।

आदमी– मेरे साथ तुम भी बैठे थे इसलिए तुम्हारे भी पचास रूपए हो गए।

रमेश जलानी, फलसूण्ड (राज.)

एक बार गणित, भौतिकी और रसायन के अध्यापक नदी के किनारे बैठे थे।

गणित का अध्यापक – मैं इस नदी की गहराई नाप कर आता हूँ। ऐसा कहकर वह नदी में कूद गया।

भौतिकी का अध्यापक– मैं इस नदी का घनत्व नाप कर आता हूँ ये कहकर वह भी नदी में कूद गया। जब काफी देर तक दोनों अध्यापक वापस नहीं लौटते तो रसायन का अध्यापक कहता है– लगता हैं, दोनो घुलनशील है।

अंकित त्रिपाठी, कटनी (म.प्र.)

एक औरत अपनी जीभ पर कुमकुम–चावल लगा रही थी

पति– ये क्या कर रही हो?

पत्नी – आज विजया दशमी है शस्त्र पूजन कर रही हूँ।

उमा पाटीदार, रांकोदा (म.प्र.)

बेटा– पिताजी कोई आया है।

पिता– कौन है?

बेटा – कोई मूँछ वाला है।

पिता– कह दो नहीं चाहिए।

आदर्श सिंह (म.प्र.)

बेटा–पिताजी, आप जैसे मुझे गलती पर सजा देते हैं, क्या दादाजी भी ऐसा किया करते थे।

पिता– हाँ, बिल्कुल

बेटा– तो फिर ये खानदानी परम्परा कब तक चलेगी?

देवेन्द्र कुमार कतरोलिया, ग्वालियर (म.प्र.)

गिलास बनाने वाली फैक्ट्री का विज्ञापन– हमारे बनाए गिलासों की मजबूती का जवाब नहीं पच्चीस फुट की ऊंचाई से गिराइए चौबीस फुट ग्यारह इंच तक न टूटने की गारंटी।

*****

गंजा होने का एक फायदा है श्रीमान्!, बूंदाबांदी शुरु होने वाली हो तो उसकी सबसे पहले खबर आपको लगती है।

*****

गरारे करने का सबसे बड़ा लाभ क्या है?

इस प्रकार आपको मालूम हो जाता है कि आपका गला कहीं से लीक तो नहीं कर रहा है।

सोनू परमार, पलसावद (म.प्र.)

सही उत्तर

उलझन सुलझाओ

(१) २१ (२) २२

चली ज्ञान की रेल आओ खेले खेल

(१) ट (२) च (३) ग (४) ब
(५) ड़ (६) फ (७) ल (८) द
(९) र (१०) ह (११) म (१२) सि

ऋषि मोहन श्रीवास्तव, ग्वालियर

देवपुत्र का अक्टूबर १५ अंक मिला। डॉ. राष्ट्रबंधु की स्मृति में प्रकाशित यह अंक निश्चित रूप से उनके प्रति देवपुत्र परिवार की सच्ची श्रद्धांजलि है। आपने तो इतने अनूठे तरीके से उनकी प्रमुख रचनाओं को देवपुत्र में स्थान दिया है कि अंक संग्रहणीय बन पड़ा है।

भेरूलाल कनेरिया, मंदसौर

मन कल्पनाओं का सागर है, जिसकी लहरें सर्वत्र स्थायीत्व को ढूँढती रहती हैं। हर मानव अपनी कल्पनाओं के शब्दों को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास करता है और पत्रिकाएँ उन्हीं के अभिव्यक्ति को समेटकर जन–मानस तक पहुँचाने का श्रेष्ठ माध्यम है। देवपुत्र भी उसी का एक अंग है। जो भैया–बहिनों और शेष पाठकों का मार्ग प्रशस्त करती है।

देवपुत्र के अंक नियमित प्राप्त हो जाते हैं। माह जनवरी अंक में जिसमें प्रेरक प्रसंग, कहानियाँ, कविताएँ, आलेख, बालोपयोगी बाल लेखनी, शिक्षाप्रद ही नहीं बल्कि मन के विचारों में परिवर्तन करने वाले भावों को व्यक्त किया गया है। शिशु के चंचल मन पर किसी कही बात या पढ़े हुए प्रेरक प्रसंगों का गहरा प्रभाव पड़ता है। आकाश जी शर्मा द्वारा लिखित आलेख भारतीय संविधान का बोध कराता है। डॉ. मंजरी शुक्ला द्वारा लिखित कहानी दोस्ती अलिशा सक्सेना की बाल लेखनी मेरी चिड़िया बुंदकी भैया/बहिनों का मार्ग प्रशस्त करती है। इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ...।

लखन सोलंकी, आकासौदा

मैं देवपुत्र का नियमित पाठक हूँ। हमें देवपुत्र पढना बहुत अच्छा लगता है। इसमें कई रोचक जानकारियाँ मिलती है। इसे पढ़ने से हमारा बौद्धिक विकास होता है और हमें कई ज्ञान की बातें मिलती है। हमें हर महिन देवपुत्र का इंतजार रहता है।

विशेष पत्र

डॉ. हिम्मतसिंह सिन्हा

देवपुत्र निरंतर प्राप्त हो रहा है। सब बच्चे बड़ी रुचि से अध्ययन करते हैं और आगामी संस्करण की प्रतीक्षा करते रहते हैं हर लेख, कहानी आदि बड़ी ज्ञानवर्धक तथा प्रेरणाप्रद लगती है।

इस बार (जनवरी२०१६)प्रश्नमंच में प्रश्न पूछे गए थे कि भारत का नाम किस के नाम पर रखा गया और इसका उत्तर दिया गया शकुन्तला के पुत्र भरत के नाम पर, यह शास्त्र सम्मत नहीं है। विष्णु पुराण के प्रथम खण्ड, अध्याय–२ के ३२वें श्लोक में स्पष्ट वर्णन है कि आर्ष भरत के नाम पर इस भूमि का नाम भरत हुआ। यह भगवान ऋषभ देव जी के ज्येष्ठ पुत्र थे। शकुन्तलेय भरत का नाम किसी शास्त्र में नहीं आता, लोक कथाओं तथा नाटक, नौटंकी में आता है। इस का शास्त्र के अनुसार कृपया ठीक कर दें या किसी शास्त्र का प्रमाण शकुन्तला के भरत के पक्ष में उदघृत कर दें जिससे भ्रांति का निवारण हो जाए।

● **कुरुक्षेत्र (हरियाणा)**

आपके द्वारा महत्वपूर्ण सूचना मिली है हम सधन्यवाद आपके संशोधन को स्वीकार करते हैं।

–सं.

छुट्टियों में

कथा - चंदा सिंह

चित्रकथा - देवांशु वत्स

विशेष सूचना

प्रिय पाठको! स्वामी विवेकानंद के १५० वें जयंती वर्ष पर प्रकाशित, स्वामी जी के जीवन पर आधारित सम्पूर्ण बहुरंगी चित्रकथा सारे भारत में लाखों पाठकों द्वारा पढ़ी एवं सराही गई।

यह 'चित्रकथा' आपकी माँग पर और भी उपलब्ध हो सकती है यदि आप ५०,१०० या इससे अधिक संख्या में उपहार/वितरण/विक्रय हेतु चाहते है तो कृपया १०रु. प्रति चित्रकथा की दर से देवपुत्र का अग्रिम शुल्क भेजिए। चित्रकथा अपेक्षित संख्या में डाक/ट्रांसपोर्ट से भेजी जा सकेगी।

- सम्पादक

देवपुत्र बाल मासिक के विगत वर्षों में प्रकाशित लोकप्रिय अंकों का सजिल्द संकलन

उपलब्ध है ...

देवपुत्र पत्रिका के विगत वर्षों में अनेक अंक जिन्हें पाठक अपने पुस्तकालय में संकलित करना चाहते हैं पाठकों की मांग पर उपलब्ध १२-१२ अंकों का सजिल्द संच (फाईल) डाक खर्च सहित मात्र १००/- मूल्य पर उपलब्ध है।

इच्छुक पाठक *देवपुत्र-४० संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)* के पते पर मनिआर्डर/ड्राफ्ट/चेक द्वारा निर्धारित शुल्क भेज कर प्राप्त करें। यह सुविधा उपलब्ध अंकों के लिए है एवं अंक उपलब्ध रहने तक ही प्रदान की जा सकेगी।

बाल साहित्य सृजनपीठ, इन्दौर द्वारा प्रकाशित

५७२ पृष्ठों में ५६० बाल साहित्यकारों का सचित्र परिचय

बृहद बाल साहित्यकार कोश

(मात्र २५०+३० डाक खर्च में उपलब्ध है।)

कोश मँगाने के लिए बाल साहित्य सृजनपीठ इन्दौर के नाम से चेक/ड्राफ्ट/मनिऑर्डर निम्न पते पर भेजिए।

बाल साहित्य सृजनपीठ, इन्दौर

४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

दूरभाष (०७३१) २४००४३९

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१५-२०१७ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात है।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

• संस्थानों/विद्यालयों के लिए १० से अधिक अंक की सामूहिक सदस्यता हेतु वार्षिक सदस्यता	११०/-
• एक अंक	१५/-
• वार्षिक सदस्यता	१५०/-
• त्रैवार्षिक सदस्यता	४००/-
• पंचवार्षिक सदस्यता	६००/-
• आजीवन सदस्यता	११००/-

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना